रमज़ानुल मुबारक

हज़रत सलमान रज़ि० कहते हैं कि नबी करीम स०अ० ने शाबान की आख़िरी तारीख़ में हम लोगों को बयान फ़रमाया, कि तुम्हारे ऊपर एक महीना आ रहा है जो बहुत बड़ा महीना है, बहुत मुबारक महीना है, इसमें एक रात है (शब क़द्र) जो हज़ारों महीनों से बढ़ कर है। अल्लाह तआला ने इसके रोज़े को फ़र्ज़ फ़रमाया और उसके रात के क़याम (यानि तरावीह) को सवाब की चीज़ बनाया है। जो आदमी इस महीने में किसी नेकी के साथ अल्लाह की समीपता प्राप्त करे ऐसा है जैसा कि ग़ैर रमज़ान में फ़र्ज़ अदा किया हो और जो आदमी इस महीने में किसी फ़र्ज़ को अदा करे वो ऐसा है जैसा कि ग़ैर रमज़ान में सत्तर फ़र्ज़ अदा किये। ये महीना सब्र का है और सब्र का बदला जन्नत है। और ये महीना लोगों के साथ सिलारहमी करने का है इस महीने में मोमिन का रिज़्क़ बढ़ा दिया जाता है। जो आदमी किसी रोज़ादार को रोज़ा अफ़तार कराये उसके लिये गुनाहों के माफ़ होने और आग से बचने का कारण होगा। और रोज़ेदार के सवाब की तरह इसको सवाब मिलेगा। मगर उस रोज़ेदार के सवाब से कुछ कम न किया जाएगा। सहाबा किराम रज़ि० ने अर्ज़ किया कि रसूलल्लाह स०अ० हम मे से हर आदमी इतना हैसियत नहीं रखता कि वो रोज़ादार को अफ़तार कराए तो आप स०अ० ने फ़रमाया (पेट भर खिलाना उद्देश्य नहीं) ये सवाब तो अल्लाह तआला, एक खजूर से कोई अफ़तार करा दे या एक घूंट पानी पिला दे या एक घूंट लस्सी पिला दे, उसको भी दे देते हैं। ये ऐसा महीना है कि इसका अव्वल हिस्सा अल्लाह की रहमत है और बीच का हिस्सा मग़फ़िरत है और आख़िरी हिस्सा आग से आज़ादी है। जो व्यक्ति इस महीने में अपने गुलाम या ख़ादिम के बोझ को हल्का कर दे तो अल्लाह तआला उसकी मग़फ़िरत फ़रमा देते हैं और आग से आज़ादी फ़रमाते हैं। और चार चीज़ों की इसमें कसरत रखा करो जिनमे से दो चीज़ें अल्लाह तआला की रज़ा के वास्ते और दो चीज़ें ऐसी हैं कि जिनसे तुम्हे छुटकारा नहीं। पहली दो चीज़ें जिनसे तुम अपने रब को राज़ी करो वो कल्मा तय्यबा और अस्तग़फ़ार की अधिकता है, और दूसरी दो चीज़ें ये हैं कि जन्नत की तलब करो और आग से पनाह मांगो। जो व्यक्ति किसी रोज़ादार को पानी पिलाए अल्लाह तआला क़यामत के दिन मेरी हौज़ से उसको ऐसा पानी पिलांएगें जिसके बाद जन्नत में दाख़िल होने तक प्यास नहीं लगेगी।

भौतिकता का ज्ञान अधिक
ज़िन्दगी का ज्ञान कम

मौजूदा ज़िन्दगी इन्सान को उकसाती है कि वो दौलत को हर मुमकिन ज़रिये से हासिल करे लेकिन ये ज़रिये इन्सान को दौलत के मक़सद तक नहीं पहुंचाते। ये इन्सान में एक स्थायी उत्तेजना और जिन्सी ख़्वाहिशों की पूर्ति का एक निचला स्तर पैदा करते हैं। इनके असर से इन्सान ज़ब्त व सब्र से ख़ाली हो जाता है और हर ऐसे काम से बचने लगता है जो ज़रा सा मुश्किल हो। ऐसा लगता है कि नयी सभ्यता ऐसे इन्सान पैदा ही नही कर सकती। जिनमें शिल्पकारी, हिम्मत हो, हर देश का शासक वर्ग जिसके हाथ देश की बाग़डोर होती है ज़हनी और अख़्लाक़ी क़ाबिलियत में नुमायां गिरावट नज़र आती है। हम महसूस करें कि नयी सभ्यता ने बड़ी बड़ी उम्मीदों को पूरा नहीं किया। जो इन्सानियत ने इससे जोड़ रखीं थीं। और ये उन लोगों को पैदा करने में नाकाम रही जो ज़हीन और हिम्मत वाले हों। और सभ्यता को कठिन रास्तों से सलामती के साथ ले जा सकें। जिस पर वो आज ठोकरें खा रहीं है। वाक़्या ये है कि इनसानो ने तेज़ी के साथ उन्नति नही कि जिस तेज़ी के साथ उनके संस्थाओं ने उन्नति की जो इन्सानी दिमाग़ का नतीजा हैं। ये अस्ल में सियासी रहनुमाओं के ज़हनी व अख़्लाकी कमियों का नतीजा है और उनकी इस जिहालत का जिसने मौजूदा कौमों को ख़तरे में डाल दिया है, डाक्टरी का ज्ञान, और व्यापार का फ़न, ने इन्सानों के लिये जो माहौल तैयार किया वो इन्सानों के हाल से मुनासिब नहीं है। इसलिये कि वो बरजस्ता है किसी पुराने नक़्शा या ग़ौरो फ़िक्र पर आधारित नहीं और इसमें इन्सान की शख़्सियत के साथ साथ तुलना का लिहाज नहीं रखा गया। ये माहौल जो केवल हमारी ज़हानत और खोज का परिणाम है हमारे अनुसार नहीं। हम मसरूर नहीं हैं। हम एक रोज़ बरोज़ अख़्लाक़ी और अक़्ली गिरावट में लिप्त हैं। जिन कौमों में उधोगी फ़न फला फूला और अपने उरूज को पहुंचा है वो पहले से बहुत कमज़ोर हैं। और वो बड़ी तेज़ रफ़्तार के साथ वहशत व बरबरियत की ओर बढ़ रहे हैं लेकिन उनको इसका एहसास नहीं। उनको इस समय इस बाग़ी दुश्मन इन्सानियत माहौल से कोई ताक़त पहुंचा नही सकती हैं जो इच्छिक ज्ञान ने उनके इर्द गिर्द खींच दिया है।

वास्तविकता ये है कि हमारी सभ्यता ने पिछली सभ्यताओं की तरह ज़िन्दगी के लिये ऐसी शर्तें लागू कर लीं हैं जो (कई अज्ञात कारणों से) जिन्दगी को नामुमकिनुल अमल बना देगी। हम भौतिकता का जितना ज्ञान रखते हैं उसके मुक़ाबले में जिन्दगी का ज्ञान और ये कि इन्सान को किस तरह ज़िन्दगी गुज़ारनी चाहिये बहुत कम रखते हैं। और हमारा ज्ञान इस बारे में अभी तक बहुत पीछे है। और इस कम इल्मी का नुक़सान हम भुगत रहे हैं।

डाक्टर एलेक्स केरल
इन्सानी दुनिया पर मुसलमानों के उरूज व ज़वाल का असर

www.abulhasanalinadwi.org

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक – 7-8 वर्ष–3

जुलाई – अगस्त २०११ ई०

शाबान – रमज़ान १४३२ हि०

संरक्षक

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
अध्यक्ष - दारे अरफ़ात

निरीक्षक

मौ0 वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेट्री– दारे अरफ़ात
मौ0 अहमद अली हसनी नदवी
डायरेक्टर– दारे अरफ़ात

सम्पादकीय मण्डल

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी
मो0 हसन नदवी

सह सम्पादक

मो0 नफ़ीस ख़ॉ नदवी

यह अंक – 16रू

प्रति अंक–8रू वार्षिक–80रू0
सम्मानीय सदस्यता–500रू0 वार्षिक

FAX-0535-2211188

www.abulhasanalinadwi.org

e-mail ID: markazulimam@gmail.com

विषय सूची

बहार की आमद
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी 1

रोज़े का इतिहास
हज़रत मौलाना सैय्यद सुलेमान नदवी........3

इख़्लास अमल की रूह
मौलाना मुहम्मद अहमद प्रतापगढ़ी........4

ईदुल फ़ित्र
हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन नदवी........5

रमज़ानुल मुबारक की आमद
मौलाना मुहम्मद सानी हसनी........6

सूरह फ़ातिहा
मौलाना मुहम्मदुल हसनी........7

रोज़े का महीना
हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी........8

दोस्त और दु मन की पहचान
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी........10

रोज़े के कुछ मसले
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी........12

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ की ज़िन्दगी
उमर उस्मान नदवी........13

ब–ए–क़द्र
अहसन अब्दुल हक़ नदवी........14

प्र न उत्तर
अबरार हसन अय्यूबी नदवी........15

तुर्की
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी........16

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली, यू0पी0.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात तकिया कला रायबरेली से प्रकाशित किया।

www.abulhasanalinadwi.org

सम्पादकीय

बहार की आमद

→››› बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

जिन्दगी एक तूफ़ान की तरह तेज़ी से गुज़र रही है। किसी शायर ने कहा था:

सुबह होती है शाम होती है   उम्र यूं हीं तमाम होती है

ये एक वास्तविकता है कि न सुबह का पता चलता है न शाम का। दिन इस तरह गुज़ता है कि जैसे कुछ लम्हे हों जो गुज़र गये हफ़्ता एक दिन लगता है, और महीना गुज़र जाता है तो लगता है कि एक हफ़्ता ही गुज़रा है। और अब तो आलम ये है कि पूरा पूरा साल इस तरह गुज़र जाता है कि इसकी मुद्दत एक महीने से ज़्यादा की नहीं लगती। इन्सान ने जिस तरह अपनी ज़िन्दगी मशीनी बनायी है। अल्लाह तआला ने उसी तरह ज़माने को भी एक मशीन की तरह बना दिया है। जिसकी रफ़्तार बढ़ती ही चली जा रही है। और ये एक पेशीनगोई है सैय्यदना मुहम्मद स०अ० की कि क़यामत जितनी क़रीब आती जाएगी ज़माना सिकुड़ता चला जाएगा।

अभी कल की बात लगती है कि रमज़ान का मुबारक महीना अपनी आन बान के साथ आया था और बहारें बिखेर कर गया था। साल किस तरह गुज़र गया लगता है कि एक ख़्वाब था।

जिन्दगी है या कोई तूफ़ान है

जिन्दगी के इन तूफ़ानी मसलों में वक़्त को पकड़ना और उसको मूल्यवान कर लेना कोई हाथ का खेल नहीं है। जो लोग लम्हों लम्हों का हिसाब करते हैं और सेकेन्डों का दिल चीर कर उसमें से भी कुछ वसूल कर लेते हैं वो ज़माने के सबसे कामयाब लोग हैं। और ये जब ही संभव है कि जब ज़िन्दगी को आदमी खुद गुज़ारे। जिन्दगी उसको न गुज़ार दे। जिन्दगी की लगाम उसके हाथ में हो। वो ज़माने के रुख़ पर बह न जाये। बल्कि वो खुद ज़माने को रुख़ देने की योग्यता रखता हो। उसके लिये हर चीज़ का बहुत पहले से हिसाब लगाने की ज़रूरत होती है। और ख़ास तौर पर अगर कोई चीज़ क़ीमती है तो उसके लिये बहुत पहले से तैयारी की ज़रूरत पड़ती है।

रमज़ान का मुबारक महीना अल्लाह की एक अज़ीम नेमत है। अल्लाह ने इसके अन्दर ऐसे लाल और जवाहिर रखें हैं कि उनको समेटने के लिये बड़े जर्फ़ की ज़रूरत है। और ये पूरी तरह जब ही मुमकिन है कि आदमी पहले से इसकी तैयारी करे। हुज़ूर स०अ० ने इसीलिये उम्मत को पहले से ध्यान दिलाया, हदीस में आता है कि जब रजब का चांद निकलता है तो आप स०अ० ये दुआ फ़रमाते थे: (ऐ अल्लाह हमारे लिये रजब व शाबान में बरकत दे और हमें रमज़ान तक पहुंचा दे) इस दुआ में बड़े हकीमाना अन्दाज़ में आप स०अ० ने कम से कम दो महीने पहले से रमज़ान की तैयारी की तलक़ीन फ़रमायी है।

ये दो महीने इन्तिज़ार और तैयारी के हैं और बरकत की दुआ में ये ख़ास पहलु है कि तैयारी बेहतर से बेहतर तरीक़े पर हो, और ईमान वाला अपने को ऐसा बना ले कि रमज़ान की आमद होते ही इस पर रहमत व बरकत की बारिश शुरू हो जाए।

एक बाग़बान बारिश से पहले अपने खेत की फ़िक्र करता है कि जो बारिश हो वो बेकार न जाए इसका पानी उसके खेत में जज़्ब भी हो और रुक भी जाए ताकि इससे फ़ाएदा उठाना पूरी तरह मुमकिन हो। इसीलिये मेहनती किसान एक खेत से कई कई फ़सलें तैयार करता है और जो ग़ाफ़िल और सुस्त हो उसके लिये एक फ़सल तैयार करना मुश्किल हो जाता है।

रमज़ानुल मुबारक की तैयारी अगर पहले से की जाती है तो इसका लम्हा लम्हा ख़ैर व बरकत के साथ गुज़रता है। तैयारी को बहुत से लोग समझते हैं कि सहरी व अफ़तार का इन्तिज़ाम पहले से कर लिया जाए तरह तरह की चीज़े रमज़ान के लिये जमा करके रख ली जांए। ये तैयारी तो बजाए फ़ाएदा पहुंचाने के कभी कभी नुक़सानदेह साबित होती है और उद्देश्य को समाप्त कर देती है। अस्ल तैयारी ये है कि इसको रहमत–ए–इलाही के क़ाबिल बनाया जाए। जो आमाल रहमत से दूरी का कारण बनते हैं उनसे तौबा की जाए।

रमज़ान इबादतों की बहार और जश्न–ए–आम का मौसम है। इसमें साल भर की रूहानी ग़िज़ा उपलब्ध होती है। जिसका रमज़ान कैफ़ियतों और बरकतों के साथ गुज़रा उसका साल भी बेहतर गुज़रता है। और ये कैफ़ियतें और बरकतें जब ही हासिल हो सकती हैं जब ईमान वाला पहले ही से अपने आपको इसके लिये तैयार करे। इसके लिये बुनियादी तौर पर चीज़े ज़रूर हैं। एक तो ये कि अल्लाह से संबंध को पहले ही से मज़बूत कर लिया जाए, और इस सिलसिले में कोताहियों से तौबा की जाए। नमाज़ो की पाबन्दी, कुछ तिलावत व ज़िक्र की पाबन्दी, हर तरह के गुनाहों से तौबा पहले ही करके दिल को इस क़ाबिल बनाने की कोशिश की जाए कि इस पर जब रहमत–ए–इलाही की बारिश हो तो वो इसको हासिल कर सके। दूसरी अहम बात ये है कि बन्दों से संबंध को भी ठीक किया जाएं और अगर किसी का कोई हक़ पहले से वाजिब है तो उसको अदा करके दिल के गुबार को साफ़ कर लिया जाए, अगर किसी से लड़ाई झगड़ा हो तो सुलह सफ़ाई कर ली जाए कि ये चीज़ सबसे ज़्यादा रमज़ान की रहमतों से दूरी का कारण बनती हैं। अल्लाह तआला अपने हक़ को माफ़ कर देता है। लेकिन बन्दों का हक़ अदा किये बग़ैर या जिसका हक़ है उससे माफ़ कराए, माफ़ नहीं करता, और इस सिलसिले में सबसे ज़्यादा कोताही होती है।

www.abulhasanalinadwi.org

रोज़े का इतिहास

→››› सैय्यद सुलेमान नदवी रह0

<u>रोज़े का अर्थ</u>: रोज़ा इस्लाम की इबादत का तीसरा रुक्न है, अरबी में इसको "सोम" कहते हैं, जिसके शाब्दिक अर्थ "रुकने और चुप रहने के हैं" कई व्याख्या करने वालों की व्याख्याओं के अनुसार कुरआन पाक में इसको कहीं–कहीं "सब्र" भी कहा गया है जिसका अर्थ "नफ़्स पर रोक लगाना" साबित क़दम रहना और धैर्यता का है। इन अर्थों से ज़ाहिर होता है कि इस्लाम की ज़बान में रोज़े का क्या अर्थ है?वो अस्ल में नफ़्सानी इच्छाओं व हवस से अपने आप को रोकने और हिस्र और हवस में डगमगा देने वाले मौक़ों मे अपने आप को रोके रहने और साबित क़दम रखने का नाम है। रोज़ाना प्रयोग में साधारणतयः नफ़्स की इच्छाओं और इन्सानी हिस्र का आधार तीन चीज़ें हैं। यानि खाना, पीना और मर्द–औरत के लैंगिक संबंध। उन्ही से एक निश्चित समय तक रुके रहने का नाम शरीअत में रोज़ा है लेकिन वास्तव में इन ज़ाहिरी इच्छाओं के साथ आन्तरिक इच्छाओं और बुराइयों से दिल और ज़बान को सुरक्षित रखना भी रोज़े की वास्तविकता में दाख़िल है।

<u>रोज़े का प्रारम्भिक इतिहास</u>: रोज़े का प्रारम्भिक इतिहास मालूम नहीं, इन्गिलशतान के मशहूर हकीम हरबर्ट स्पेन्सर (Herbet Spencer) अपनी किताब प्रिन्सिपल्स आफ़ सोशालाजी (Principles Of Sociology) (सामाजिक सिद्धान्त) में कुछ वहशी क़बीलों की मिसाल के आधार पर सोचता है कि रोज़ा का प्रारम्भ वास्तव में इस तरह हुआ होगा किः लोग वहशत के ज़माने में खुद भूखे रहते होंगे, और समझते होंगे कि हमारे बदले हमारा खाना इस तहर मर्द–औरत को पहुंच जाता है। लेकिन ये विचार अक़्ल वालों की निगाह में स्वीकृति न प्राप्त कर सका। बहरहाल मुश्रिकाना मज़हबों में रोज़े की हक़ीक़त के चाहे कुछ ही कारण हों लेकिन इस्लाम का रोज़ा अपने प्रारम्भ की व्याख्या में अपने पीरों का मोहताज नहीं हैः (अनुवादः मुसलमानों! रोज़ा तुम पर इस तरह फ़र्ज़ किया गया है जिस तरह तुमसे पहली क़ौमों पर फ़र्ज़ हुआ ताकि तुम परहेज़गार बनो, माहे रमज़ान वो महीना है जिसमें कुरआन उतारा गया जो इन्सानों के लिये सरापा हिदायत की दलीलें और सच व झूठ में फ़र्क़ करने वाला बन कर आया है। तो जो इस रमज़ान को पाये वो इस महीने भर के रोज़े रखे और जो बीमार हो, सफ़र पर हो, वो दूसरे दिनों में रख ले, खुदा आसानी चाहता है, सख़्ती नहीं ताकि तुम रोज़ों की गिनती पूरी कर सके और (ये रोज़ा इसलिये फ़र्ज़ हुआ) ताकि तुम ख़ुदा के इस हिदायत देने पर उसकी बड़ाई करो और ताकि तुम शुक्र बजा लाओ)

इन आयाते पाक में न केवल रोज़े के कुछ आदेश, बल्कि रोज़े का इतिहास, रोज़े की हक़ीक़त, रमज़ान का महत्व, और रोज़े पर एतराज़ के ये सभी काम स्प ट रूप से बयान हुए हैं। नीचे के पन्नों पर हम उन पर प्रकाश डालते हैं।

<u>रोज़े का धार्मिक इतिहास</u>: कुरआन पाक ने इन आयातों की व्याख्या की है कि रोज़ा इस्लाम के साथ विशे ा नहीं बल्कि इस्लाम से पहले भी वो सभी धर्मों के एक संग्रहित आदेश का हिस्सा रहा है। जाहिल अरब का पैग़म्बर स0अ0 उम्मी जो विरोधियों के अनुसार दुनिया के इतिहास से अनभिज्ञ था, वो मुद्दई है कि दुनिया के सभी देशो में रोज़ा फ़र्ज़ इबादत रहा है। अगर ये दावा तमाम सही तथ्यों पर आधारित है तो उसके ज्ञान के ऊपर के साधन में क्या शक रह जाता है। इसी दावे की तस्दीक़ में यूरोप के प्रमाणित तथ्यों का हम हवाला देते हैं।

इन्साइक्लोपेडिया बरटानेका का लेखक रोज़े (Fasting) पर लिखता है, "रोज़े के उसूल और तरीक़े को आबो हवा, क़ौमी तहज़ीब और आसपास के हालात के इख़्तलाफ़ से बहुत कुछ भिन्न है लेकिन बड़ी मुश्किल से किसी ऐसे मज़हब का नाम हम ले सकते हैं जिसकी धार्मिक व्यवस्था में रोज़ा किसी न किसी रूप में स्वीकार न किया गया हो"

आगे चलकर लिखता है, "मानो कि रोज़ा मज़हबी रस्म की हैसियत से हर जगह मौजूद है" हिन्दुस्तान को सबसे अधिक पुराने होने का दावा है, लेकिन व्रत यानि रोज़ा से वो भी आज़ाद नहीं। हर हिन्दी महीने की ग्यारह बारह को ब्राहम्णों पर एकादशी का रोज़ा है। इस हिसाब से साल के चौबीस हुए, कई ब्राहम्ण कार्तिक के महीने में हर दोशम्बा को रोज़ा रखते हैं, हिन्दू जोगी चिल्ला खींचते हैं, यानि चालीस दिन तक खाने पीने से परहेज़ करते हैं। हिन्दूस्तान के सभी धर्मों में, जैनी धर्म में रोज़ा की सख़्त शर्तें हैं। चालीस चालीस दिन तक उनके यहां एक रोज़ा होता है। गुजरात व दकन में हर साल कई कई हफ़्ते का रोज़ा रखते हैं। पुराने मिस्रियों के यहां भी बहुत से धार्मिक त्योहारों के शुमूल में नज़र आता है। यूनान में केवल औरतें थ्योमोफ़िरया की तीसरी तारीख़ को रोज़ा रखती थीं। पारसी धर्म में आम पीरों पर रोज़ा फ़र्ज़ नहीं बल्कि उनकी इल्हामी किताब की आयत से साबित होता है कि रोज़ा का आदेश उनके यहां मौजूद था। ख़ासकर धार्मिक गुरूओं के लिये पांच साला रोज़ा आवश्यक था।

यहूदियों में भी रोज़ा अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़र्ज़ है। हज़रत मूसा अलै0 ने कोह पहाड़ पर चालिस दिन भूखे प्यासे गुज़ारे। इसलिये आम तौर से यहूदी हज़रत मूसा की पैरवी में चालिस दिन रोज़ा रखना अच्छा समझते हैं। लेकिन दस दिन का रोज़ा उन पर फ़र्ज़ है जो उनके सातवें महीने (तशरीन) की दसवीं तारीख़ को पड़ता है। और इसलिये वो इसको आशूरा (दसवां) कहते हैं। यही आशूरा का दिन वो दिन था जिसमें हज़रत मूसा अलै0 को तौरात के दस आदेश दिये गये। इसलिये तौरात में इस दस रोज़े की बहुत ताकीद है। और इसके अलावा यहूदी सहीफ़ों में और दूसरे रोज़ों के आदेश भी स्प टता के साथ दिये गये हैं।

(ो ा पेज न0 13 पर)

www.abulhasanalinadwi.org

इख़्लास
अमल की रूह

—»» **मौलाना मुहम्मद अहमद प्रतापगढ़ी रह0**

(अनुवादः जिन लोगों ने कुबूल कर लिया कि हमारा रब अल्लाह है, फिर उस पर स्थिर रहे, उन लोगों पर अल्लाह के फ़रिश्ते उतरेंगे और कहेंगे कि तुम न अन्देशा करो और न रंज करो, तुम जन्नत के मिलने पर ख़ुश रहो जिसका तुमसे वादा किया जाता था।)

सहाबा किराम रज़ि0 का इतिहास उठा कर पढ़िये तो उनकी परेशानियों का हाल मालूम हो कि अन्गारों पर लिटाए जाते थे, सीने पर पत्थर रखे जाते थे, बदन में कांटे चुभाए जाते थे, शिद्दत की धूप में कांटे पर घसीटे जाते थे फिर भी एक अल्लाह की आवाज़ लगाते थे, इसलिये कि उन्होने इस्लाम को दीन–ए–हक़ समझ कर कुबूल किया था और उसी पर मरते दम तक साबित क़दम और अटल रहे यहां तक कि अपनी जान, अपना माल, अपनी इज़्ज़त अपनी औलाद, सारी चीज़ों को उन्होनें दीन इस्लाम पर क़ुर्बान कर दिया। इश्क़ व मुहब्बत का अस्ली रंग और जान निसारी और फ़िदाइयत का अस्ली नमूना अगर देखना हो तो सहाबा किराम रज़ि0 को देखो उन्होने पहाड़ की तरह स्थिर बन कर सारे आलम को दिखा दिया तो अल्लाह तआला की तरफ़ से उन पर भी इनामात हुए कि दुनिया में जन्नत की ख़ुशख़बरी उनको सुनाई गयी, अल्लाह की रज़ा का परवाना उनके लिये नाज़िल हुआः (अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वो अल्लाह से राज़ी हुए)

सहाबा किराम से संबंध में अल्लाह तआला ने मेरी ज़बान से बहुत कुछ कहलवाया है उनमे से कुछ शेर इस समय प्रस्तुत करता हूं।

गुलामाने सरकार याद आ रहें हैं
वो आवाने अन्सार याद आ रहे हैं
जो चूं चरां जानते ही नहीं थे
ख़ुदा के वफ़ादार याद आ रहे हैं
जो पीते थे मरदुम शराबे मुहब्बत
वही मुझसे मेख़्वार याद आ रहें हैं
मुसख्ख़र हुए जिनसे अग़यार के दिल
वो अख़लाक़ वो किरदार याद आ रहें हैं
ख़ुदा उनसे राज़ी वो राज़ी ख़ुदा से
मुहब्बत के बीमार याद आ रहे हैं
मुहब्बत सहाबा कि पैदा हो जिनसे
वो अख़बार व आसार याद आ रहें हैं।

एक बार सहाबा किराम रज़ि0 की एक जमाअत जो तीस लोगों की थी सफ़र पर गयी और अरब के किसी क़बीले में ठहरी। और उन लोगों से मेहमान दारी चाही। मगर उन लोगों ने उन लोगों की मेहमाननवाज़ी नहीं की। फ़िर वाक़्या पेश आया कि इस क़बीले के सरदार को सांप ने डस लिया, बहुत से वैद्य इलाज के लिये बुलाए गये, और उन्होने हर सम्भव प्रयास किये लेकिन कोई उपाय कारगर नही सिद्ध हुआ। सरदार किसी प्रकार ठीक न हो रहा था। किसी ने कहा कि अगर तुम इस जमाअत के पास जाओ बाहर से आकर ठहरी है तो शायद उनमें से कोई इस मर्ज़ को दूर करने का मन्तर जानता हो, जाओ ज़रा पूछो तो सही इसलिये लोगों ने जाकर उन हज़रात से कहा कि हमारे सरदार को सांप ने काट लिया है और हमने उनके इलाज के लिये हर उपाय कर लिया लेकिन कोई उपाय कारगर न हुआ। क्या तुममे से किसी के पास इसका मन्तर है। एक सहाबी रज़ि0 ने कहा कि हां! बाख़ुदा मैं इसका मन्तर जानता हूं मगर चूंकि तुम लोगों ने हमारी मेहमानी का हक़ अदा नहीं किया, इसलिये जब तक तुम कोई सही उजरत न तय करोगे हम तुम्हारे अमीर को दम न करेगें। इसलिये उन लोगों ने तीस बकरियां देना स्वीकार किया, एक रिवायत में सौ भी आया है। तो जाकर सूरह फ़ातिहा पढ़कर दम कर दिया उसी वक़्त अमीर होश में आ गया, और उठ कर बैठ गया, इस तरह चलने फिरने लगा कि मानों उसको कोई बीमारी ही नहीं हुई थी। फिर शर्त के अनुसार उनको बकरियां देकर विदा किया।

अब सहाबा किराम में इख़्तिलाफ़ हुआ कि इन बकरियों का खाना कैसा है?किसी ने कहा कि इसको आपस में बांट लिया जाए, मगर जिन्होने दम किया था उन्होने कहा कि इनको इस समय तक न बांटो जब तक हम लोग हूज़ूर अक़दस स0अ0 की ख़िदमत में पहुंच कर वाक़्या ज़िक्र न कर लें। फिर हम इन्तिज़ार करें कि आप स0अ0 इसके बारे में क्या आदेश देते हें?ये तय करके चले, जब आप स0अ0 की ख़िदमत में पहुंचे और पूरा क़िस्सा ज़िक्र किया, तो आप स0अ0 ने मुस्करा कर फ़रमाया कि तुमको कैसे मालूम हो गया कि सूरह फ़ातिहा इस ज़हर का मन्तर है। फिर इरशाद फ़रमाया कि तुमने ठीक किया, इसको तक़सीम करो और अपने साथ मेरा भी हिस्सा लगाओ।

भाई सुनो! कलाम पाक में आज भी वही तासीर है, मगर हमारे पास ज़बान नहीं, और हमारे सीनों में वो दिल नहीं जिससे सहाबा किराम रज़ि0 और अल्लाह वाले तिलावत करते थे, इसलिये पहले अपनी ज़बान को पाक करो, और दिल को साफ़ करो, इसके बाद जब कलामुल्लाह की तिलावत करोगे तो उसका असर होगा। अल्लाह वालों की ज़बान में भी असर होता है।

हज़रत हकीमुल्उम्मत थानवी रह0 के बयानों में मैंने पढ़ा है कि सैयद अब्दूल क़ादिर जीलानी रह0 के साहबज़ादे जब फ़ारिग़ होकर तशरीफ़ लाये तो उनका बयान हुआ और बहुत देर तक बयान हुआ बहुत सी अच्छी अच्छी बातें बयान फ़रमायी लेकिन किसी पर कुछ असर न हुआ, रमज़ान का ज़माना था, उनको ख़्याल हुआ कि मैंने इतना लम्बा बयान किया, क़ुरआन की आयतें पढीं, हदीसें पढ़ीं, बुज़ुर्गों के वाक़्यात सुनाए, मगर किसी पर कुछ असर न हुआ, आख़िर क्या बात है? (ा पेज न0 11 पर)

www.abulhasanalinadwi.org

ईदुल फ़ित्र

→›› हज़रत मौलाना सैयद अबुल हसन अली हसनी नदवी

मुसलमानों के दो सबसे बड़े त्योहार ईदुल फित्र व ईदुल अज़हा हैं। जिनको ईद व बक़रीद के नाम से भी जाना जाता है। ईद रमज़ान के महीने के ख़ात्मे और शव्वाल (जो इस्लामी कैलेन्डर का दसवां महीना है) के चांद निकलने पर शव्वाल की पहली तारीख़ को होती है। चूंकि रमज़ान का महीना रोज़े का महीना है और वो सब्र व इबादत, नफ़्स पर नियन्त्रण और दीनी व रूहानी व्यस्तता में गुज़रता है। इसलिये क़ुदरती तौर पर ईद के चांद का बड़ा इन्तिज़ार होता है। ख़ास तौर पर उन्तीस के चांद की ज़्यादा ख़ुशी होती है। उर्दू में ईद का चांद और उन्तीस का चांद शौक़ व ख़ुशी के लिये मुहावरा बन गये हैं। रमज़ान की उन्तीस तारीख़ को सूरज डूबने के समय मुसलमानों की निगाहें आसमान की तरफ़ होती हैं, और हर उम्र व हर वर्ग के लोग चांद की तलाश में व्यस्त हो जाते हैं। उन्तीस को चांद नज़र नहीं आता है तो अगले दिन भी रोज़ा रखा जाता है। और तीस का चांद यक़ीनी हो जाता है। जैसे ही चांद पर नज़र पड़ती है हर ओर से मुबारक सलामत का शोर तेज़ हो जाता है। छोटे–बड़ों को सलाम करते हैं, बच्चे ख़ानदान के बुज़ुर्गों को और औरतों को ईद की मुबारक बाद देते हैं, और उनकी दुआएं लेते हैं। जो लोग पढ़े–लिखे हैं और सुन्नत पर अमल करने की कोशिश करते हैं वो चांद को देखकर नीचे लिखी दुआ पढ़ते हैं: (ऐ चांद! मेरा और तेरा परवरदिगार अल्लाह है, तू हिदायत और भलाई का चांद है। ऐ अल्लाह! इस महीने को हमारे ऊपर ईमान व सलामती व फ़रमाबरदारी और और अपनी मर्ज़ी की तौफ़ीक़ के साथ शुरू फ़रमा)

ईद का स्वागत और उस दिन के काम

कई दिन पहले से ईद की तैयारी शुरू हो जाती है, लेकिन ईद की रात में बड़ी हमा हमी और बाज़ारों और घरों में चहल पहल होती है। सुबह से ईद की तैयारी शुरू हो जाती है। इस हक़ीक़त को प्रकट करने के लिये कि आज रोज़ा नहीं है और ख़ुदा ने उन्तीस या तीस दिन के विपरीत आज खाने पीने की आज्ञा दी है, सुबह ही सुबह हैसियत के अनुसार खजूर या सेवईं से सत्कार किया जाता है, फिर नहाने का काम शुरू होता है। ख़ुदा ने जिनको दिया है वो इस दिन नया कपड़ा पहनते ज़रूरी समझते हैं। नहा धोकर, कपड़े पहन कर, इत्र व ख़ुशबू लगाकर, लोग ईदगाह की तरफ़ रवाना होते हैं। ईदगाह जाने से पहले ग़रीबों को कुछ ग़ल्ला या नक़्द निकालते हैं। जिसको सदक़े फ़ित्र कहते हैं। ये मानो रमज़ान के रोज़ो का शुक्रिया है। अगर गेहूं की शक्ल में हो तो उसका वज़न पौने दो सेर के क़रीब होता है। और अगर जौ हो तो उसका वज़न दोगुना। और उसकी क़ीमत भी अदा की जा सकती है। जो कि ग़ल्ले के दाम के अनुसार घटती बढ़ती रहती है। ये सदक़ा बालिग़ों के अलावा बच्चो की तरफ़ से भी अदा किया जाता है। ईद की नमाज़ सूरज बुलन्द होने के बाद अदा करना सुन्नत है। और उसमें जितनी जल्दी हो उतना ही बेहतर है। लेकिन ईद के इन्तिज़ाम की वजह से हिन्दुस्तान में इसको देर से पढ़ने का आम रिवाज हो गया है। फिर भी दस से लेकर ग्यारह बजे तक पढ़ ली जाती है। ईद की नमाज़ की अस्ली जगह शहर के बाहर मैदान या ईद गाह थी। लेकिन अब सहूलत पसन्दी, आबादी की अधिकता, वक़्त की क़िल्लत और शहरों के फ़ैलाव के कारण मस्जिदों में ईद की नमाज़ पढ़ने का रिवाज बहुत बढ़ गया है। फिर भी सबसे बड़ी जमाअत शहर की ईदगाह में होती है।

ईद की नमाज़: मुसलमान ईद की नमाज़ पढ़ने जब जाते हैं तो रास्ते में अल्लाह की तारीफ़ और शुक्र के अल्फ़ाज़ धीरे–धीरे कहते हुए जाते हैं, मसनून ये है कि एक रास्ता से ईदगाह जाए और दूसरे रास्ते से वापस आये, ताकि दोनों तरफ़ ख़ुदा की अज़मत ओर मुसलमानों के ज़ौक़–ए–इबादत और शाने वहदत का इज़हार हो जाए, लेकिन अब फ़ासले की अधिकता उन्नति के साथ आम तौर पर सवारियां इस्तेमाल की जाती हैं और दो रास्तों की पाबन्दी लगभग ख़त्म हो गयी है।

पांचों समय की नमाज़ों और जुमा के विपरीत ईद की नमाज़ से पहले न अज़ान है, न इक़ामत, न कोई सुन्नत, न कोई नफ़िल, जैसे ही मुसलमान एकत्र हो जाते हैं, या नमाज़ का समय हो जाता है, इमाम आगे बढ़ जाता है, और नमाज़ शुरू कर देता है। आम नमाज़ों की तरह हर रकआत में दो तकबीरें हैं और एक तकबीरे तहरीमा है जिससे नमाज़ शुरू की जाती है और एक रुकू की तकबीर, लेकिन ईदैन की नमाज़ में हनफ़ियों के यहां हर रकअत में चार तकबीरें हैं। सलाम फेरने के बाद इमाम फ़ौरन मेम्बर पर चला जाता है, और ईद का ख़ुत्बा देता है। जो जुमा की तरह दो क़िस्मों में बंटा हुआ है। एक ख़ुत्बा देकर वो चन्द सेकेन्ड के लिये बैठ जाता है। फिर खड़ा होता होता है और दूसरा ख़ुत्बा देता है। जुमा में पहले ख़ुत्बा है फिर नमाज़, ईद में पहले नमाज़ है फिर ख़ुत्बा। हिन्दुस्तान में आम तौर पर अरबी में ख़ुत्बा पढ़ने का रिवाज है। अक्सर इमाम ख़ुत्बे की किताब लेकर ख़ुत्बा पढ़ते हैं। अब बहुत जगह (कम से कम ईद के एक ख़ुत्बे का) उर्दू या क्षेत्रीय भा [illegible] में देने का रिवाज हो गया है। इसमें ईद की हक़ीक़त, इसका पयाम, ईद के एहकाम व आदेश व मसले और समय की याचनांए और आवश्यकताओं पर प्रकाश डाला जाता है।

ईद के बाद एक दूसरे से मिलना और आदर व सत्कार करना

ईद के ख़ुत्बे के ख़त्म होते ही लोग एक दूसरे से गले मिलना शुरू कर देते हैं। ये बात ध्यान देने योग्य है कि इस गले मिलने का रिवाज हिन्दुस्तान की विशे [illegible] है। गले मिलने की कोई शरई हैसियत नहीं है और न इस्लाम के केन्द्र में इसका कोई रिवाज है। कुछ आश्चर्य नहीं कि मुसलमानों ने इसको अपने हम वतनों के कई त्योहारों की रस्मों, ख़ासकर, "होली मिलन" से लिया हो। जो प्रेम व ख़ुशी प्रकट करने का एक प्रतीक माना जाता है। ईदगाह से वापसी पर लोग घरों पर ईद मिलने जाते हैं, और एक दूसरे का सेवईं से स्वागत व सत्कार करते हैं। इस मौक़े पर सेवईं का ऐसा रिवाज है कि वो ईद का एक निशान (**Symbol**) बन गयी है। ये भी ख़ालिस हिन्दुस्तानी चीज़ है दूसरे इस्लामी देशों में इत्र व दूसरी शीरीनी से स्वागत व सत्कार करते हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

रमज़ानुल मुबारक की आमद

—››› मौलाना मुहम्मद सानी हसनी रह0

रमज़ान की मुबारक आमद आमद है। कितने ख़ुशनसीब हैं वो भाई और बहनें जिनकी ज़िन्दगी में मुबारक महीना फिर आया है, और उनमें सबसे ज़्यादा ख़ुशनसीब वो हैं जो इस मुबारक महीने की क़द्र व क़ीमत पहचानें और इसका पूरा हक़ अदा करें। ये मुबारक महीना देखने में बारह महीनों में से एक महीना है लेकिन ख़ुदा ने इसमें जो बरकतें और रहमतें रखी हैं वो किसी और महीने को हासिल नहीं। इसकी क़द्र व क़ीमत का अन्दाज़ा रसूलुल्लाह स0अ0 के इरशादात और आप स0अ0 के तरीक़ों से कीजिए।

हमारे आपके आक़ा हज़रत मुहम्मद स0अ0 शाबान ही के महीने से रमज़ानुल मुबारक की तैयारी फ़रमाया करते थे और शाबान का अधिकतर हिस्सा रोज़े में गुज़ारते और जब रमज़ान क़रीब आता तो रमज़ान से संबंधित हिदायत देते। इसके फ़ाएदे बताते और लोगों को रमज़ानुल मुबारक में इबादत और मेहनत, त्याग, सदक़ा व ख़ैरात, इस्तिग़फ़ार व तिलावत की ताकीद और इस माह में ग़फ़लत और कोताही पर सख़्त गुस्सा फ़रमाते। हज़रत उबादा बिन सामित से रिवायत है कि एक बार हुज़ूर स0अ0 ने रमज़ानुल मुबारक के क़रीब फ़रमाया कि:

"रमज़ान का महीना आ गया है जो बड़ी बरकत वाला है। अल्लाह इसमें तुम्हारी तरफ़ अधिक ध्यान देता है, अपनी रहमतों से नवाज़ता है, गुनाहों को माफ़ करता है, दुआ क़ुबूल करता है और तुम्हारे एक दूसरे से बढ़कर नेकी करने को देखता है और फ़रिश्तों में फ़ख़्र से बयान करता है, बस अल्लाह को अपनी नेकी दिखाओ। बदनसीब है वो जो इस महीने में भी अल्लाह की रहमत से महरूम रह जाए।"

दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया! मेरी उम्मत को रमज़ान के बारे में पांच ख़ास नेमतों से नवाज़ा गया है जिनसे पहली उम्मतें महरूम थीं।

1. उनके मुंह की बू जो रोज़े की वजह से पैदा हो जाती है, अल्लाह के नज़दीक मुश्क से ज़्यादा पसन्दीदा है।
2. उनके लिये दरियां की मछलियां तक दुआ करती हैं।
3. जन्नत उनके लिये हर रोज़ आरास्ता की जाती है और अल्लाह फ़रमाता है कि क़रीब है कि मेरे बन्दे अपने ऊपर से परेशानियों का बोझ उतार कर तेरे अन्दर आ जाएं।
4. सरकश शैतान कैद कर दिये जाते हैं।
5. रमज़ान की आख़िरी रात में रोज़ादारों की मग़फ़िरत कर दी जाती है।

आप के अलावा सहाबा किराम रज़ि0 और सहाबी बीवियों रज़ि0 का हाल रमज़ान आते ही कुछ से कुछ हो जाता और वो हज़रात रात भर इबादत करते, दिन को रोज़े रखते, और केवल खाने पीने से बचते बल्कि हर छोटे से छोटे गुनाह से भी अपने को बचाते, अपनी निगाहों की और अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करते यहां तक कि सहाबी बीवियां रज़ि0 अपने बच्चों और बच्चियों को रोज़ा रखने की आदत डलवाते। रमज़ानुल मुबारक का मौसम बहार बन कर आता। रमज़ान उनके घरों में आता तो ख़ुशी के शादयाने बजते। चेहरों पर रौनक़ आ जाती। दिन हो या रात हर घर से क़ुरआन मजीद पढ़ने की आवाज़ आती। अलग़रज़ ग़रीब या अमीर, अनपढ़ व आमिल, मर्द औरत, छोटा बड़ा, हर एक मस्त और शरसार नज़र आता। और जब रमज़ान रुख़सत हो जाता तो ये अपने ग़मज़दा दिल और नम आंखो से विदा करते। दुआ करते कि ख़ुदाया हमारी ज़िन्दगी में ये दिन फिर नसीब हों।

ये तो हाल था उन बुज़ुर्गों का लेकिन अब ज़रा अपनी हालत का निरीक्षण कीजिए कि आज कल जब रमज़ानुल मुबारक आता है तो हमारा क्या हाल होता है। न वो उमंगें होती हैं, न वो इबादत का जज़्बा, न वो निगाहों व ज़बान की हिफ़ाज़त, न तिलावत का शौक़, न अस्तग़फ़ार की कसरत, हम मुसलमान भाइयों और बहनों में ऐसे बहुत मिलेंगे जो रोज़ा तक नहीं रखते और ख़ुदा के हुक्म को पीठ पीछे डाल कर आज़ादी से ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। रमज़ान आता है और गुज़र जाता है। और अल्लाह के उन बन्दों को पता तक नहीं चलता कि कौन सा मुबारक महीना उनके सरों पर साया ए आंगन है बल्कि रमज़ान के आने से उनको तकलीफ़ और उसके जाने से ख़ुशी महसूस करते हैं। न तो ख़ुद रोज़ा रखते हैं न अफ़सोस होता है। मुझको अपने बचपन का एक क़िस्सा याद है कि मेरे यहां एक मुसलमान औरत आयी, वो रोज़े से न थी, बीबियों ने उससे कहा कि तुम रोज़ा क्यों नहीं रखती, तो उसने बड़ी हिम्मत से जवाब दिया, "मैं रोज़ा क्यूं रखूं, क्या मेरे यहां खाने को नहीं" ये जुम्ला कितना कठोर और गुस्ताख़ी भरा है। ख़ुदा इससे हमको बचाए।

एक ज़माना था कि रोज़ा रखने वाले और न रखने वाले सभी लोग रमज़ान की इज़्ज़त करते थे। बाज़ारों में खाने पीने की चीज़ें नहीं मिलती थीं। दुकानों पर पर्दे पड़ जाते थे, कोई बीमार और विकलांग आदमी भी सबके सामने न खाता था। हर आने जाने वाला देख कर जानता था कि ये रमज़ान का महीना है। ग़ैर मुस्लिम भी परहेज़ करते थे। लेकिन आज रोज़ बरोज़ ये एहतराम ख़त्म हो रहा है। आज ख़ुद मुसलमान धड़ल्ले से खाता पीता है और अपने मज़हब और अपने दीन का मज़ाक़ उड़ाता है। बाज़ारों में मुसलमान मर्द और औरतें खाने पीने से नहीं हिचकिचातीं। इन आखों ने ख़ुद रोज़े के दिनों में मुसलमान बुरक़ा पोश औरतों को खाते पीते देखा है। इससे बढ़कर ख़ुदा के हुक्म के साथ और क्या होगा। और इससे बढ़कर बेइज़्ज़ती की बात और क्या होगी।

लेकिन इसके साथ–साथ मुसलमानों की संख्या भी माशाअल्लाह कम नहीं जो रमज़ान का एहतराम करते हैं। रोज़े रखते हैं, और रातों को जागते हैं। और अपनी बख़्शिश का सामान करते हैं। रमज़ान के आते ही मस्जिदों मे रौनक़ बढ़ जाती है। नेकियों की ओर रूझान हो जाता है। नमाज़ियों की संख्या बढ़ जाती है लेकिन रोज़ा दारों और शब बेदारी करने वालो में भी ऐसे लोग ज़्यादा नहीं है जो रमज़ान मुबारक के पूरे हुक़ूक़ को अदा करें और तमाम आदाब का ख़्याल करते हों। इससे ग़ाफ़िल न होना चाहिये कि रोज़ा केवल इसका नाम नही कि आप सुबह सादिक़ से लेकर सूरज डूबने तक न खाए न पिये। बल्कि रोज़े में उन दोनों चीज़ों के अलावा और बहुत सी चीज़ों से परहेज़ किया जाता है।

www.abulhasanalinadwi.org

सूरह फ़ातिहा

—›› मुहम्मदुल हसनी रह0

क़ुरआन मजीद और अरबी ज़बान से संबधित कुछ लोगों का विचार है कि इसको समझना और सीखना बहुत मुश्किल है। लेकिन ये बात ठीक नहीं है। अल्लाह तआला का इरशाद है: (अनुवाद: बेशक हमने आसान किया क़ुरआन को नसीहत और याद के लिये, क्या है कोई सबक़ हासिल करने वाला) अगर ख़ुलूस, सच्चाई और पाबन्दी के साथ इसकी तरफ़ कुछ ध्यान दिया जाए तो इंशाअल्लाह वंचित नहीं रहेगें। वंचित तो वो भी नहीं है जिसको क़ुरआन मजीद के केवल एक शब्द या एक आयत के माने भी मालूम होंगे। लेकिन अल्लाह तआला की ज़ात से उम्मीद है कि इससे अधिक लाभ होगा। इस नये पाठ और नये विषय का प्रारम्भ इसी नियत से किया जा रहा है इस प्रकाशन में इसकी दरअस्ल बिस्मिल्लाह

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

الرَّجِيْمِ	الشَّيْطَانِ	مِنَ	اللّٰهِ	بِ	اَعُوْذُ
मरदूद	शैतान	से	अल्लाह	साथ (कि)	मैं पनाह चाहता हूं

मैं पनाह चाहता हूं अल्लाह की शैतान मरदूद से

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الرَّحِيْمِ	الرَّحْمٰنِ	اللّٰهِ	اسْمِ	بِ
निहायत रहम वाला	बेहद	अल्लाह के	नाम	साथ (से)

अल्लाह के नाम से शुरू, जो बेहद मेहरबान और निहायत रहम वाला है।

व्याख्या

हमारी उर्दू ज़बान में अरबी के शब्द इतनी अधिक मात्रा में हैं कि आधे अर्थ हमको इंशाअल्लाह यूं ही समझ में आ जांएगे।

दूसरी बात ये है कि "ब" के माने साथ के हैं, "अल्लाह" के माने अल्लाह, दोनों को मिलाना होगा तो लिखा जाएगा "बिल्लाह" यानि अल्लाह के साथ। ये एक बहुत आसान बात है। लेकिन इतनी फ़ाएदेमन्द कि बाक़ी आधी के क़रीब अरबी इसको समझ लेने से आ जाएेगी। फिर कुछ चीज़ें और हैं और वो भी हमें इंशाअल्लाह बाद में आसान मालूम होंगी। ये हर चीज़ का क़ाएदा है, लेकिन क़ुरआन मजीद की बरकत और आम फ़ाएदे की वजह से ये सहूलियत इसमें सबसे ज़्यादा है।

सूरतुल फ़ातिहा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम वाला है

सारी तारीफ़ें अल्लाह के लिये जो सारे जहानों का रब है।

सूरह फ़ातिहा के संबंध में खुद क़ुरआन मजीद में एक जगह आया है, रसूलल्लाह स0अ0 को सम्बोधित करके फ़रमाया गया है: (अनुवाद: हमने अता की है आपको बार बार दोहरायी जाने वाली सात आयतें और क़ुरआन अज़ीम)

इस सूरह की जिससे अल्लाह तआला की किताब की शुरूआत होती है और जिसको हम हर रकअत में पढ़ते हैं, दूसरी विशेषता ये है कि इसमें सारे क़ुरआन मजीद का ख़ुलासा बयान कर दिया गया है, और बन्दे को अपने मालिक व मौला के दरबार में ऐसे स्पष्ट व संक्षिप्त शब्दों में दुआ की शिक्षा दी गयी है, इसकी मिसाल किसी और दुआ और मुनाजात में और दुनिया के किसी और मज़हब की तालीम व तलक़ीन में और दुआ में भी नहीं मिलती। फिर ये ऐसी दुआ है जो सारे इन्सानों की है। और किसी को भी इसमें ऐसी बात नहीं मिलेगी जो उसके नज़दीक किसी लिहाज़ से भी एतराज़ के क़ाबिल हो।

इसकी शुरूआत हम्द व सना से होती है। "अल्हम्दुलिल्लाह" के माने हैं "कुल तारीफ़ और सारी की सारी तारीफ़" इसमें तारीफ़ व तौसीफ़ और हम्द व सना की तमाम क़िस्में आ गयीं जिनकी पूरी तफ़सील बयान करना इन्सानी ताक़त से बाहर है। इसके बाद "रब्बिल आलमीन" कहा गया, पूरे जहान वालों का परवरदिगार, उन सबको रोज़ी देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, मुश्फ़िक़ व मेहरबान, और उनकी सभी ज़रूरतों को पूरा करने वाला। "अल आलमीन" का दायरा भी इतना बड़ा और आम है कि इसमें इस कायनात की हर चीज़ आ गयी। लेकिन एक बच्चे की पैदाइश पर ही नज़र डालिये, न केवल पैदा होने के बाद से बल्कि उसके पहले ही से ख़ुदा की मेहरबानी व कारसाज़ी का जो जलवा नज़र आता है वो ईमान लाने के लिये काफ़ी है। केवल ये एक आयत जिससे अहम सूरह की शुरूआत होती है, अपने अन्दर माने का जो भण्डार रखती है उसकी व्याख्या किसी के बस की बात नहीं, इसके तीनों हिस्से या शब्द "अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन" अपने अन्दर वास्तविकता, वाक्यात, मालूमात, और ईमानियत की एक पूरी दुनिया रखते हैं, और अगर हम ग़ौर करेंगे हमको ख़ुद अपने अन्दर और अपने माहौल में ये चीज़ें नज़र आने लगेंगी, और हमको सोचने और विचार करने की दावत देंगी। अल्लाह तआला फ़रमाता है: (अनुवाद: हम अनक़रीब दिखांएगे अपनी निशानियां आसमान में और ख़ुद उनके अन्दर, यहां तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाए कि वो हक़ है)

आगे बताया जा रहा है कि ये पालने वाला, काम बनाने वाल रब कैसा है, "रहमान और रहीम है" हदीस में इसकी व्याख्या ये आयी है कि: (यानि दुनिया में इसकी विशेषताओं का जो उदय हो रहा है, उसके लिहाज़ से वो रहमान और आख़िरत की रहमत जिस तरह अपने फ़रमाबरदार बन्दों के हक़ में ज़ाहिर होगी, उसके लिहाज़ से रहीम है) और इसीलिये शायद रहमान को रहीम पर मुकद्दम भी रखा गया है। इसलिये शुरूआत में आदमी इस दुनिया में रहमान के फ़ज़्ल व करम का मोहताज है। उसकी ज़िन्दगी, ताक़त, सेहत व आफ़ियत, माल व लुत्फ़, के बग़ैर हासिल नहीं हो सकती वो पालने वाला और दुनिया और आख़िरत दोनों जगह में बेहद रहम वाला है। (शेष पेज न0 11 पर)

www.abulhasanalinadwi.org

रोज़े का महीना

ख़ैर व बरकत का महीना और रूहानी प्रशिक्षण की सालाना व्यवस्था

—››› मौलाना सैय्यद राबे हसनी नदवी

रमज़ानुल मुबारक का महीना ख़ैर व बरकत का महीना है। ईमान व इबादत का महीना है। मुसलमानों को मुसलमान बनकर और अपने आमाल को अल्लाह की रज़ा के अनुसार ढ़ालने की कोशिश का महीना है। दौलतमन्द को अपनी दौलत के ज़रिये खुदा को राज़ी व खुश करने का, और ग़रीब को अपनी ग़रीबी के बावजूद नेक अमल करने का महीना है। ये महीना आता है तो फ़िज़ा को नूर वाला बना देता है। ईमान वालों में खुशी की लहर दौड़ा देता है। मुसलमानों की सुबह शाम को अजीब रौनक़ से रौनक़ वाला बना देता है। बड़े उम्र के लोग खुलूसुल अमल के साथ नेकी करते हैं। छोटी उम्र के लोग इस माह की लज़्ज़त भरी अफ़्तारी से आनन्द प्राप्त करते हैं। इसकी फ़ज्र की सहरियां या उसकी सूरज डूबने के बाद की अफ़्तारियां या उसकी रातों का ज़िक्र व इबादत, उसके दिनों की तिलावत, सब इसकी रौनक को दो गुना कर देते हैं। फिर उन सब बातों पर हासिल होने वाला सवाब मोमिन के दिल को खुश कर देता है क्योंकि अल्लाह तआला की तरफ़ से उस पर ख़ास सवाब देने का वादा है।

रमज़ान का रोज़ा अस्ल में विभिन्न प्रकार के आमालों का संग्रह है। इसमें मुसलमान को अपने परवरदिगार की रज़ा की तलब में अपने नफ़्स को मारना पड़ता है। इसमें आख़िरत के सवाब के लिये अपने माल को ख़र्च करने, अपने परवरदिगार की याद को दिल में जगाने के लिये नमाज़ व तिलावत का ख़ास मौक़ा मिलता है। अपनी ज़बान को खूबी और नेकी का पाबन्द बनाने का माहौल मिलता है। अपने वक़्त को सुथरे और पाकीज़ा काम के साथ जोड़ने का साधन मिलता है और नेक अमल की तौफ़ीक़ होती है।

रमज़ानुल मुबारक में अल्लाह तआला के हुक्म से शैतान क़ैद कर दिये जाते हैं। शैतान जिनका काम बस ये है कि वो इन्सानों को अच्छे कामों से रोके और बुरे कामों में लगाए। इस माह में अपने इस ज़ालिमाना और गन्दे काम से रोक दिया जाता है। इसके नतीजे में नेकी करने वालों को नेकी करने में आसानी होती है। और बुराई अपनाने वालो को बुराई की ओर जाने में उतना आक र्षा नहीं बाक़ी रहता जितना ग़ैर रमज़ान में होता है।

हर इन्सान नफ़्स व नफ़्सियात से भी जुड़ा हुआ है। इन्सान का नफ़्स आनन्द प्राप्त करने वाला और राहत तलब होता है। इसमें लालच का भाव भी होता है और स्वार्थ का भाव भी होता है। ज़िन्दगी की बहुत सी बुराइयों को अपनाने में इन्सान का नफ़्स साधन बनता है। इसमें शैतान के प्रयास पर ही आधार नहीं। शैतान इसमें केवल बढ़ावा देता है और ताक़त पहुंचाता है और दूसरी बड़ी बुराईयों की ओर प्रेरित करता है। और उनमें सहायता करता है। रमज़ान में जो बुराइयां की जाती हैं वो उसके लिये कम होती हैं कि वो केवल नफ़्स के असर से होती हैं। उनमें शैतान का सहारा नहीं मिलता।

लेकिन इन्सानी नफ़्स कुछ इन्सानों में और कुछ अवसरों पर इतनी बड़ी और मोटी हो जाती है कि उसको अपने बुरे कामों के लिये शैतान के सहारे की कोई ख़ास आवश्यकता नहीं होती, ये नफ़्स रमज़ान के महीने में भी अपना काम कर सकती है और करती है। लेकिन अल्लाह तआला ने रोज़े में ये असर भी रखा है कि वो नफ़्स को कमज़ोर कर दे और उसको उसके बुरे प्रभाव से रोके और उसके असर को कम कर दे। क्योंकि रोज़ा अस्ल में नफ़्स के ख़राब असर को तोड़ने का अमल है। इन्सान का पेट जब ख़ाली होता है और प्यास का एहसास होता है तो बुराइयों की तरफ़ उसका रूझान कमज़ोर पड़ जाता है। इन्सान में भरे पेट के साथ ग़लत कामों की ओर जो मैलान होता है वो ख़ाली पेट में और इन्सानी इच्छा के पूरे न होने के मौक़े पर नही होता है। इसलिये हुज़ूर स0अ0 ने ऐसे व्यक्ति को जिसकी नफ़्सानी इच्छा ज़्यादा होती हो लेकिन उसके पास पारिवारिक ज़िन्दगी अपनाने की माली सकत न हो रोज़े रखने की ताकीद फ़रमाई ताकि वो अपनी ख़्वाहिश पर ग़ालिब आ सके उसकी ख़ातिर ग़लत काम में लिप्त न हो जाए। रोज़े की साख़्त अल्लाह तआला ने ऐसी बनायी है कि वो नेकियों की राह बनाता है और गुनाहों की राह से रोकता है। लेकिन रोज़े के असरात और उसकी नेक फ़िज़ा उसी समय अपना अमल करती हैं जब रोज़े को इसके आदाब और उसकी तय की एहतियातों के साथ रखा जाए। वो खुदा के लिये हो। अपने किसी भौतिक या स्वार्थ की पूर्ति के लिये न हो। रोज़े में जो बातें मना की गयीं हैं उनसे पूरा परहेज़ हो, और रोज़े की फ़िज़ा को क़ायम करने के लिये जो काम बताये गये हैं वो अपनाएं जांए।

रोज़ा यूं ज़ाहिर में फ़र्ज के समय से सूरज डूबने के समय तक खाने पीने और हमबिस्तरी से बचने का नाम है। लेकिन इसके साथ–साथ झूठ से, ग़ीबत से, और ज़बान व हाथ के दूसरे गुनाहों से, पूरे परहेज़ का नाम भी है। इसलिये हदीस शरीफ़ में आया कि किसी ने रोज़ा रखा और खाने से परहेज़ किया लेकिन ग़ीबत, झूठ जैसे कामों से परहेज़ नहीं किया तो उसको क्या ज़रूरत थी कि वो भूखा प्यासा रहे। इसका मतलब ये हुआ कि ऐसे व्यक्ति का रोज़ा बेकार गया। इसलिये कई फ़िक्‌ह के अइम्मा के यहां झूठ बोलने और ग़ीबत करने से भी रोज़ा टूट जाता है। लेकिन सब अइम्मा के नज़दीक ऐसा नहीं है। वो कहते हैं कि रोज़े का ज़ाहिर अमल तो अन्जाम पा जाता है क्योंकि अस्ल शर्त पूरी हो गयी इसका सवाब जाता रहता है। क्योंकि इसके आदाब का लिहाज़ नही किया। रोज़ा को अल्लाह तआला ने नेकियों का मौसम बनाया है इसमें जिस क़द्र नेकी करने की सूरतें बनती हैं दूसरे कामों में मुश्किल से बनती हैं, इसमें तो एक खुद रोज़ा बड़ा अमल है फिर इसमें नमाज़ें हैं, कुरआन मजीद की तिलावत है, ग़रीबों की मदद है, और बिला क़ैद हर समय खाने पीने से रोक है। और तक़वा की कैफ़ियत अपनाने का अवसर है।

www.abulhasanalinadwi.org

फिर और उसमें नेकी करने का सवाब सत्तर गुना कर दिया जाता है। ग़ैर रमज़ान में की जाने वाली एक नेकी और रमज़ान में की जाने वाली एक नेकी के सवाब में एक और सत्तर का फ़र्क़ है।

फिर रमज़ान में रोज़े रखना सभी मुसलमानों पर एक साथ फ़र्ज़ किया गया है इसलिये मुसलमानों के समाज में इस पूरे समय में हर ओर एक ही फ़िज़ा बन जाती है और वो फ़िज़ा है नेकी की, हमदर्दी की, नर्मी की, और आख़िरत की चाह की, एहतियात व इबादत की फ़िज़ा होती है।

इसलिये रमज़ान में उन लोगों को जिनको रमज़ान में बीमारी या सफ़र के कारण रोज़ा छोड़ने की आज्ञा दी गयी है उनको भी ये मना है कि वो जन साधारण के बीच न खाएं। उनको आदेश है कि सबसे अलग जगह ऐसा करें ताकि रोज़े का वातावरण प्रभावित न हो।

रमज़ान अस्ल में नफ़्स को क़ाबू करने और उसकी बुरी ताक़त को कमज़ोर करने की एक वार्षिक प्रशिक्षण व्यवस्था है। इस व्यवस्था से हर मुसलमान को साल में एक बार गुज़रना पड़ता है। आवश्यकता है कि जिस प्रकार हम ज़िन्दगी की ज़रूरतों के लिये किसी भी वार्षिक प्रशिक्षण कैम्प या प्रशिक्षण स्थल में समय ध्यान के साथ बिताते हैं रमज़ान के इस निज़ाम में भी इसके आदाब और अहकाम के अनुसार समय बिताएं ताकि हम इस सालाना प्रशिक्षण व्यवस्था से पूरी तरह कामयाब होकर और एक नेक और सच्चे मुसलमान बन कर निकला करें।

रोज़े के लाभ और इन्दल्लाह के महत्व की ये बड़ी दलील है कि अल्लाह ने दूसरे आमाल के मुक़ाबले में इससे अपनी पसन्द अधिक प्रकट की है।

(हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलल्लाह स0अ0 ने (रोज़े की फ़ज़ीलत और क़द्र व क़ीमत बयान करते हुए) इरशाद फ़रमाया कि आदमी के हर अच्छे अमल का सवाब दस गुने से सात सौ गुने तक बढ़ जाता है। मगर अल्लाह तआला का इरशाद है कि: रोज़ा इस आम क़ानून से ऊपर है, वो बन्दे की तरफ़ से ख़ास मेरे लिये एक तोहफ़ा है, और मैं ही (जिस तरह चाहूंगा) इसका अज्र व सवाब दूंगा। मेरा बन्दा मेरी रज़ा के लिये नफ़्स की ख़्वाहिश और अपना खाना पीना छोड़ देता है (तो मैं ख़ुद ही अपनी मर्ज़ी के अनुसार उसकी इस क़ुर्बानी और नफ़्स को मारने का सिला दूंगा)

अल्लाह तआला हम सबको रमज़ान और उसके रोज़ों की क़द्र की तौफ़ीक़ दे। आमीन।

सूरह फ़ातहा

पेज 7 का शेष

इसकी शुरूआत हम्द व सना से होती है। "अल्हम्दुलिल्लाह" के माने हैं "कुल तारीफ़ और सारी की सारी तारीफ़" इसमें तारीफ़ व तौसीफ़ और हम्द व सना की तमाम क़िस्में आ गयीं जिनकी पूरी तफ़सील बयान करना इन्सानी ताक़त से बाहर है। इसके बाद "रब्बिल आलमीन" कहा गया, पूरे जहान वालों का परवरदिगार, उन सबको रोज़ी देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, मुश्फ़िक़ व मेहरबान, और उनकी सभी ज़रूरतों को पूरा करने वाला। "अल आलमीन" का दायरा भी इतना बड़ा और आम है कि इसमें इस कायनात की हर चीज़ आ गयी। लेकिन एक बच्चे की पैदाइश पर ही नज़र डालिये, न केवल पैदा होने के बाद से बल्कि उसके पहले ही से ख़ुदा की मेहरबानी व कारसाज़ी का जो जलवा नज़र आता है वो ईमान लाने के लिये काफ़ी है। केवल ये एक आयत जिससे अहम सूरह की शुरूआत होती है, अपने अन्दर माने का जो दफ़्तर रखती है उसकी तशरीह व तफ़सील किसी के बस की बात नहीं, इसके तीनों हिस्से या शब्द "अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन" अपने अन्दर वास्तविकता, वाक्यात, मालूमात, और ईमानियत की एक पूरी दुनिया रखते हैं, और अगर हम ग़ौर करेंगे हमको ख़ुद अपने अन्दर और अपने माहौल में ये चीज़ें नज़र आने लगेंगी, और हमको तदब्बुर और विचार करने की दावत देंगी। अल्लाह तआला फ़रमाता है: (अनुवाद: हम अनक़रीब दिखाएंगे अपनी निशानियां आसमान में और ख़ुद उनके अन्दर, यहां तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाए कि वो हक़ है)

आगे बताया जा रहा है कि ये पालने वाला रब कैसा है, "रहमान और रहीम है" हदीस में इसकी व्याख्या ये आयी है कि: (यानि दुनिया में इसकी विशेषताओं का जो उदय हो रहा है, उसके लिहाज़ से वो रहमान और आख़िरत की रहमत जिस तरह अपने मुतीअ व फ़रमाबरदार बन्दों के हक़ में ज़ाहिर होगी, उसके लिहाज़ से रहीम है) और इसीलिये शायद रहमान और रहीम पर मुक़द्दम भी रखा गया है। इसलिये शुरूआत में आदमी इस दुनिया में रहमान के फ़ज़ल व करम का मोहताज है। उसकी ज़िन्दगी, ताक़त, सेहत व आफ़ियत, माल व लुत्फ़, के बग़ैर हासिल नहीं हो सकती वो पालने वाला और दुनिया और आख़िरत दोनों जगह में बेहद रहम वाला है।

इख़्लास - अमल की रूह

पेज 4 का शेष

फिर उसके बाद हज़रत अब्दुल क़ादिर जीलानी रह0 जो मजलिस में तशरीफ़ लाये, आप ने लोगो को सम्बोधित करके कहा कि मेरी सहरी के लिये दूध रखा हुआ था, रात में दूध बिल्ली पी गयी, इसकी वजह से आज मैंने बग़ैर सहरी के रोज़ा रख लिया, इतना कहना था कि सारे लोगों पर गिरिया तारी हो गया, सब लोग रोने लगे, अजीब हाल हो गया, रोने धोने का एक समां बन गया।

हज़रत शेख रह0 की ज़बान में वो असर था जिससे सारे लोग प्रभावित हो गये। तो आख़िर क्या बात थी कि आप के दिल में वो दर्द व सोज़ था जिसका असर लोगों के दिलों पर पड़ता था, हज़रत शेख़ुल मशाएख़ ने अपने इस हाल से ज़ाहिर फ़रमाया कि इल्म और चीज़ है और अन्दरूनी दौलत व कैफ़ियत और चीज़ है। अल्लाह वाले जब बोलते हैं तो अल्लाह के लिये ही बोलते हैं। और क़ुरआन व हदीस से ख़ुद प्रभावित होकर बोलते हैं। इसलिये उनके बोलने में असर होता है। और जिस तरह अल्लाह वालों की ज़बान में असर होता है उस तरह उनकी आंखों में भी असर होता है। अल्लाह तआला उनको नूरे फ़िरासत अता फ़रमाते हैं जिससे वो हक़ व बातिल में तमीज़ करते हैं।

हज़रत उस्मान रज़ि0 ज़ुन्नूरैन ने एक बार फ़रमाया कि लोगों को क्या हो गया है कि हमारे पास इस हालत में आते हैं कि उनकी आंखों से ज़िना टपकता है तो नूरे फ़िरासत ही था।

हदीस शरीफ़ में बदनिगाही को आंखों का ज़िना फ़रमाया गया है। इसका असर आंख में रहता है, जिसको अल्लाह तआला अपने विशेष बन्दों पर कभी मशकूफ़ फ़रमा देते हैं, अल्लाह वालों के पास बहुत संभल कर जाना चाहिये और अपने दिल को बदलने के लिये इल्मो अमल में इख़्लास पैदा करने के लिये जाना चाहिये। भाई इख़्लास ही अमल की रूह है। मेरा अपना ही एक शेर याद आया:

अमल की रूह है इख़्लास जब तक न हासिल हा
नहीं आयेगी ईमान व अमल में तेरे ताबानी

www.abulhasanalinadwi.org

दोस्त और दुश्मन की पहचान

—»» मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी

प्राकृतिक तौर पर इन्सान के अन्दर जो गुण पाये जाते हैं जिनसे कोई व्यक्ति, प्राणी ख़ाली नहीं हो सकता, इस दुनिया की रंग व बू में जिसने भी आंखे खोली हैं उसमें ये दोनों ही चीज़ ज़रूर पायी जाएंगी। ये दोनो बहुत ही बड़ी और महत्वपूर्ण हैं, अगर इन्सान उनको उनके अनुसार अपनाएगा तो न वो गुमराह हो सकता है और न ही उसे दुनिया व आख़िरत में बदबख़्ती का सामना करना पड़ेगा।

ये हक़ीक़त का एक मसला है कि इन्सानी आबादी की इस दुनिया में दोस्ती व संबंध और जंग व युद्ध का अस्तित्व उन्ही दोनों चीज़ों पर आधारित है।

पहली चीज़ मुहब्बत है जिस की तरफ़ आकर्षित होना इन्सान की फ़ितरत और प्रकृति में प्रविष्ठ है। लेकिन कई बार इन्सान अपने महबूब की पहचान में ग़लती कर बैठता है तो उसे वो फ़ाएदे नहीं हासिल होते जो उस समय हासिल हो सकते थे कि जब उसकी मुहब्बत का रुख़ सही होता, अपने महबूब की सही पहचान कर लेता। और इन्सान अपने महबूब की पहचान में ग़लती इसलिये करता है कि वो इस रास्ते पर नहीं चलता है जो उसकी मन्ज़िल तक पहुंचाये, और हक़ व सदाक़त की ओर उसके सही मार्गदर्शन का ज़ामिन हो हालांकि इस रास्ते को अल्लाह तआला ने निश्चित फ़रमाया है, इसलिये अल्लाह तआला का इरशाद है: (अनुवाद: अल्लाह की दी हुई क़ाबिलियत की पैरवी कर जिस पर अल्लाह ने लोगों को पैदा किया है अल्लाह की इस पैदा की हुई चीज़ को जिस पर आदमियों को पैदा किया बदलना न चाहिये पस सीधा दीन यही है)

अल्लाह तआला ने इन्सान को हुक्म दिया है कि वो उस ख़ुदा से मुहब्बत करे और उसके रसूल से मुहब्बत करे इसलिये ख़ुदावन्द क़ुद्दूस ने मोमिनों का गुण बयान करते हुए फ़रमाया है: (अनुवाद: जो लोग मोमिन हैं उनको अल्लाह तआला के साथ बहुत ही मुहब्बत है)

एक दूसरी जगह ख़ुदा वन्द तआला ने मुहब्बत के सिलसिले में अपने दावा की सेहत पर दलील देने वाली एक दूसरी आयत हुज़ूर अकरम स0अ0 की तरफ़ से इरशाद फ़रमायी है कि: (अनुवाद: अगर तुम लोग अल्लाह तआला से मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो)

लिहाज़ा हुज़ूर अकरम स0अ0 की पैरवी करना ही अल्लाह की मुहब्बत का तरीक़ा घोषित किया जाता है। लेकिन रसूलुल्लाह स0अ0 की पैरवी उनसे मुहब्बत के बग़ैर आसान नहीं है। इसलिये नबी करीम स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया: (तुम में से कोई उस समय तक पूरा मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके निकट उसके वालिदैन, औलाद और सभी लोगों से अधिक महबूब न हो जाऊं) और इसी तरह आप ने एक दुआ की ताकीद भी फ़रमायी है: (ख़ुदावन्द मैं तुझसे तेरी मुहब्बत का तलबगार हूं, और जो भी तुझ से मुहब्बत करता है और हर वो अमल जो मुझे तेरी मुहब्बत से क़रीब कर दे मैं उन सबका इच्छुक और तलबगार हूं)

इन्सान जब सच्ची और वाक़ई मुहब्बत करता है तो उसके लिये उन सभी कामों का पूरा करना आसान हो जाता है जो उसे साफ़ सुथरी और स्थायी प्रेम के मार्ग पर प्रेरित करतें हैं। और जो मुहब्बत अगर दिल की गहरायी से की जाती है तो उसके अजीब व ग़रीब और अनोखे वाक़्यात पेश आते हैं और इन्सानी समाज में एक नयी ज़िन्दगी, नया जोश, नया उत्साह और नयी उत्तेजना पैदा हो जाती है और पूरी ज़िन्दगी ख़ुदा के रंग में रंग जाती है: (अनुवाद: हम दीन की इस हालत पर हैं जिसमें अल्लाह ने हमको रंग दिया है और दूसरा कौन है जिसके रंग देने की हालत अल्लाह से बेहतर हो)

दूसरी चीज़ नफ़रत व अदावत है। जिस तरह इन्सान के अन्दर उल्फ़त व मुहब्बत का पाया जाना एक फ़ितरी बात है उसी तरह नफ़रत व अदावत भी उसकी फ़ितरत व प्रकृति में दाख़िल हैं और जिस तरह इन्सान अपने महबूब को पहचानने में ग़लती करता है इसी तरह अपने दुश्मन को पहचानने में भी ग़लती कर जाता है। इसलिये वो अपने महबूब को दुश्मन समझ बैठता है। ऐसे व्यक्ति की हालत कुछ ऐसी ही है जैसा कि क़ुरआन ने बयान किया है: (अनुवाद: अगर वो हिदायत का रास्ता देखें तो उसको अपना तरीक़ा न बनांए और अगर गुमराही का रास्ता देख लें तो उसको अपना तरीक़ा बना लें)

इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला ने हमारे दुश्मन की निशानदेही फ़रमा दी है कि शैतान इन्सान का दुश्मन है इसलिये इरशाद है: (अनुवाद: ये शैतान बेशक तुम्हारा दुश्मन है, इसलिये तुम उसको अपना दुश्मन ही समझते रहो वो तो अपने गिरोह को केवल इसलिये बातिल की ओर बुलाता है ताकि वो लोग दोज़ख़ियों में से हो जांए) इसी लिये अल्लाह तआला ने साफ़ साफ़ और स्पष्ट रूप में ये हुक्म फ़रमाया कि: (अनुवाद: और शैतान के क़दम से क़दम मिला कर मत चलो, अस्ल में वो तुम्हारा खुला दुश्मन है) अतः दुश्मन के तय हो जाने के बाद अगर हमने शैतान को अपना दुश्मन नहीं समझा और हमने उससे और इन्सानों में उसके मदद करने वालों से बचने की कोशिश नहीं की तो हम उनकी तफ़रीह करने वालों का खिलौना और उनका शिकार बन सकते हैं जो हमसे और हमारे दीन इस्लाम से खिलवाड़ करना चाहते हैं, इसीलिये हुज़ूर अकरम स0अ0 ने हमें खाने पीने, उठने बैठने, पहनने ओढ़ने, और सोने जागने में उनका तरीक़ा अपनाने से रोका है। इसलिये आप स0अ0 का इरशाद है: (बायें हाथ से न खाओ इसलिये कि शैतान बायें हाथ से खाता है) और आप स0अ0 ने हुक्म

www.abulhasanalinadwi.org

दिया कि अगर खाने के बीच में लुक्मा हाथ से गिर जाए तो उसे उठा लें और अगर गन्दगी लग गयी हो तो उसे दूर करके इस लुक्मे को खा लें। और उसे शैतान के लिये हरगिज़ न छोड़ें, और एक दूसरी जगह इरशाद हुआ है कि शैतानों के घर ऊंट भी हुआ करते हैं, (ऐसे घर जिनमें बिना ज़रूरत ख़र्च किया गया हो और ऐसी सवारियां जो घमण्ड और दिखावे के लिये ली गयी हों)

हुज़ूर अकरम स0अ0 ने हमें ये हुक्म दिया है कि उन कामों व आदतों से ज़र्रा बराबर भी एकरूपता न अपनाएं जो शैतान और उसके चेलों के अन्दर पायी जाती हैं। इसलिये रसूलुल्लाह स0अ0 का इरशाद है: (यहूद व नसारा की मुख़ालफ़त करो) क्योंकि यहूद व नसारा हैं जिन्होने बीते ज़माने में अपने नबियों की पैरवी को दुनिया की चीज़ों पर तरजीह दी थी लेकिन आज उनकी हालत ये हो गयी है कि उन नबियों की इत्तिबा और उनकी पैरवी तो दूर की बात उनकी बातों को भी पीठ पीछे डाल कर शैतान के नक़्शे क़दम पर चल पड़े हैं, और हर वो काम करते हैं जो शैतान चाहता है और पसन्द करता है। जब स्थिति ऐसी है तो हर एक के लिये ज़रूरी है कि उनके रहन सहन और तौर तरीक़ों से परहेज़ करे और उनमें उनकी मुख़ालफ़त करे इसी तरह इस्लाम के सभी दुश्मनों की पैरवी और उनसे एकरूपता से बचने की कोशिश करे जिन्होने पूरी दुनिया में विभिन्न खुशनुमा नामों से इस्लाम के ख़िलाफ़ जाल फैला रखे हैं ताकि दुनिया व आख़िरत में पूरी कामयाबी हासिल हो सके।

इसमें कोई शक नहीं कि आज इन्सान और इन्सान के बीच संबंधों की रस्सी टूट चुकी है, आपसी संबंध कड़वे हो चुके हैं क्योंकि वो अपने ख़ालिक़ व मालिक को भूल चुका है। इसलिये कि उसकी मुहब्बत ज़लालत व गुमराही का शिकार हो चुकी है और वो ज़लालत व गुमराही के मैदान में चक्कर काटता व परेशान नज़र आता है, और पूरी दुनिया में वो यहूद व नसारा के फैलाए हुए जाल का शिकार हो चुका है इसलिये उसकी मुहब्बत भौतिक चीज़ों, बुरी इच्छाओं और घटिया व्यवहार की ओर आकर्षित हो चुकी है और उसके बुग्ज़ व अदावत का रुख़ कायनात के ख़ालिक और अम्बिया के द्वारा दी गयी अच्छे गुणों और उच्च व्यवहार की ओर से मुड़ चुका है।

(अनुवादः याद रखो अल्लाह ही के लिये ख़ास है ख़ालिक़ होना और हाकिम होना)

मानवता अपने अस्ल कामयाबी को उसी समय हासिल कर सकती है जबकि वो इस किताब मज़बूती से थाम ले जो आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा स0अ0 पर नाज़िल की गयी, वास्तव में इन्सानियत की कामयाबी व कामरानी इसी किताब (क़ुरआन) पर आधारित है क्योंकि बातिल न तो इसके सामने से हमला कर सकता है और न ही इसके पीछे से हमला कर सकता है इसलिये वो तमाम तारीफ़ों से सज़ावार ख़ुदावन्दी हकीम की तरफ़ से नाज़िल हुआ है।

अतः हम सभी मुसलमानों पर लाज़िम और ज़रूरी है कि पूरी इन्सानियत के लिये क़ुरआन करीम की रोशनी में सही मुहब्बत और सही अदावत के मौक़े की निश्चितता व स्प टता करें ताकि मानवता अपने सभी मुश्किलों व मसलों से निजात पाये जिसे इसको "सिरात मुस्तक़ीम" से हट जाने और दूर हो जाने के कारण झेलना और बर्दाश्त करना पड़ रहा है।

रोज़े का इतिहास

पेज 3 का शेष

ईसाई धर्म में भी हमको रोज़ा मिलता है: इसलिये हज़रत ईसा अलै0 ने भी चालिस दिन रोज़ा जंगल में रखा। हज़रत ईसा अलै0 जो के हज़रत यहया अलै0 के नक़्शो क़दम पर थे, वो भी रोज़े रखते थे और उनकी उम्मत भी रोज़ा रखती थी। यहूदियों ने अलग अलग ज़मानों में अलग–अलग वाक़्यों की याद में बहुत से रोज़े बढ़ा लिये थे और ज़्यादातर ग़म के रोज़े थे। और इस ग़म को ज़ाहिर करने के लिये अपनी ज़ाहिरी सूरत को भी वो उदास और ग़मग़ीन बना लेते थे। हज़रत ईसा अलै0 ने अपने ज़माने में ग़म के इस बनावटी तरीक़े को मना कर दिया। शायद इसी प्रकार के किसी रोज़े का अवसर था कि कुछ यहूदियों ने आकर हज़रत ईसा अलै0 पर एतराज़ किया कि तेरे शागिर्द क्यों रोज़ा नहीं रखते, हज़रत ईसा अलै0 ने इसके जवाब में फ़रमायाः "क्या बाराती जब दूल्हा उनके साथ है, रोज़े रख सकते हैं। जब तक दूल्हा उनके पास रोज़े नहीं रख सकते, पर वो दिन आयेगा जब दुल्हा उनसे जुदा कर दिया जाएगा, तब उन्ही दिनो में रोज़ा रखेंगे।"

इस वाक्य में दुल्हा से उद्देश्य स्वंय हज़रत ईसा अलै0 की मुबारक ज़ात और बाराती से मुराद उनकी पैरवी करने वाले हैं। ज़ाहिर है कि जब तक पैग़म्बर अपनी उम्मत में मौजूद है, उम्मत को ग़म करने की ज़रूरत नहीं, इन्हीं भागों से ज़ाहिर है कि हज़रत ईसा अलै0 ने मूसवी शरीअत से फ़र्ज़ व मुस्तहब रोज़ों को नही बल्कि ग़म के कारण स्वंय के बनाए हुए रोज़ों को मना फ़रमाया। उन्होने ख़ुद अपनी पैरवी करने वालों को बिना दिखावे का और मुख़लिसाना रोज़े रखने की नसीहत फ़रमायी है। चुनान्चे आप अपने पैरोकारों को फ़रमाते हैः "फिर जब तुम रोज़ा रखो दिखावा करने वालों की तरह अपना चेहरा उदास न बनाओ" क्योंकि वो अपना मुंह बिगाड़ते हैं कि लोगों के नज़दीक रोज़ादार ठहरें हैं, तुमसे सच कहता हूं कि वो अपना बदला पा चुके हैं, पर जब तुम रोज़ा रखो, अपने सर में तेल लगाओ, ताकि तुम आदमी पर नहीं अपने बाप पर जो पोशीदा है रोज़ेदार ज़ाहिर है। और तेरा बाप जो पोशीदगी में देखता है तुझको उचित बदला दे"

एक दूसरे स्थान पर हज़रत ईसा अलै0 से उनके शार्गिद पूछते हैं कि हम पलीद रूहों को किस तरह निकाल सकते हैं वो इसके जवाब में फ़रमाते हैं कि ये जिन्स सिवाए दुआ और रोज़ा के किसी तरह से नहीं निकल सकते।"

अरब वाले भी इस्लाम से पहले रोज़ा से कुछ न कुछ जुड़े हुए थे, मक्का के क़ुरैश जाहिलियत के दिनो में आशूरा (यानि दस मुहर्रम) को इसलिये रोज़ा रखते थे कि इस दिन ख़ाना–ए–काबा पर नया ग़िलाफ़ डाला जाता था, मदीना में यहूद अपना आशूरा अलग मनाते थे, यानि वही अपनी सातवी महीने की दसवीं तारीख़ को रोज़ा रखते थे।

उपरोक्त वर्णन से सिद्ध होता है कि क़ुरआन की ये आयत (अनुवादः मुसलमानों तुम पर रोज़ा इस तरह लिखा गया जिस तहर तुमसे पहलों पर लिखा गया) किस हद तक एतिहासिक तथ्यों पर आधारित है।

www.abulhasanalinadwi.org

रोज़े के कुछ मसले

—››› मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

रोज़ा भी इस्लाम के अरकान में से एक मुख्य रुक्न है। इस्लाम के आधारभूत कामों को गिनाते हुए आंहज़रत स0अ0 ने रोज़े का भी ज़िक्र फ़रमाया है। खुद क़ुरआन मजीद में इसका हुक्म देते हुए इरशाद है: (अनुवाद: ऐ ईमान वालों! तुम्हारे ऊपर रोज़े फ़र्ज़ किये गये जैसा कि तुमसे पहले की उम्मतों पर फ़र्ज़ किये गये ताकि तुम मुत्तक़ी बन जाओ)

रोज़ा एक ऐसी इबादत है जिसमें इन्सान को कठिनाई भी होती है। विशे॥ समय से विशे॥ समय तक उसे खाने पीने और नफ़्सियाती इच्छा मिटाने से रोक दिया जाता है। इसलिये इसका अज्र व सवाब भी बेइन्तहा बयान किया गया है। एक हदीस में इरशाद है: जो व्यक्ति ईमान के साथ सवाब की उम्मीद रखते हुए रोज़ा रखे उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं, और जो कोई ईमान के साथ सवाब की उम्मीद रखते हुए रमज़ान में तरावीह पढ़े उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं। और जो कोई ईमान रखते हुए और सवाब की उम्मीद रखते हुए शब क़द्र में क़यामुल्लैल करे उसके पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं। (मुत्तफ़क़ अलैह)

एक दूसरी हदीस में नबी करीम स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया, "जन्नत में आठ दरवाज़े हैं उनमें से एक दरवाज़े का नाम बाबुर्रैयान है, उससे केवल रोज़ादार दाख़िल होंगे।"

एक और हदीस में आंहज़रत स0अ0 का इरशाद है: "आदम की औलाद के हर अमल को दस गुना से सात सौ गुना तक बढ़ा दिया जाता है, अल्लाह तआला का इरशाद है: सिवाय रोज़े के: इसलिये कि वो ख़ास मेरे लिये है और उसका बदला मैं ही दूंगा, वो अपनी ख़्वाहिश और खाना–पीना मेरे लिये छोड़ देता है, रोज़े दार को दो खुशियां हासिल होती हैं, एक खुशी अफ़्तार के समय और दूसरी परवरदिगारे आलम से मुलाक़ात के समय और रोज़ेदार के मुंह की बू अल्लाह के निकट मुश्क से ज़्यादा पाकीज़ा होती है। और रोज़ा (गुनाहों या शैतान) से ढ़ाल है; और जब तुममे से किसी का रोज़ा हो तो वो बुरी बात न करे, न शोर मचाए, अगर कोई इसको बुरी लगने वाली बात कहे या झगड़ा करे तो कहे, "मैं तो एक रोज़ेदार शख़्स हूं" (मुत्तफ़क़ अलैह)

रोज़े के कुछ मसले: ये बात तो सब जानते हैं कि रोज़ा नाम ही खाने पीने और ख़्वाहिश पूरी करने से विशे॥ समय में परहेज़ करने का है। ये तीनों चीज़ें ऐसी हैं कि अगर कोई रमज़ान के रोज़े की हालत में इनको जानबूझ कर करे तो न केवल ये कि राजा टूट जाएगा, बल्कि साथ ही क़ज़ा के साथ कफ़्फ़ारा भी आवश्यक होगा। यद्यपि अगर कोई भूले से इनको करे तो न उसका रोज़ा जाएगा न कोई चीज़ लाज़िम होगी।

पान तम्बाकू और सिगरेट बीड़ी का हुक्म: इसी हुक्म में पान तम्बाकू सिगरेट बीड़ी वग़ैरह भी हैं, पान तम्बाकू की पीक अगर कोई निगल लेता है तो बिल्कुल स्प ट है कि इसने एक चीज़ हलक़ के नीचे उतार ली। अत: इससे रोज़े के टूट जाने में कोई शक नहीं है, लेकिन कई लोग पीक निगलते नहीं हैं, केवल पान तम्बाकू को चबा कर उसको थूक देते हैं, इससे कई लोगों को शक होता है कि शायद रोज़ा न टूटे इसलिये फ़ुक़्हा ने फ़रमाया कि किसी चीज़ के चबाने से रोज़ा नहीं टूटता, और इस शक्ल में केवल एक चीज़ को चबाया गया, खाया नहीं गया, लेकिन ये शक ठीक नहीं है, इसलिये कि खाने पीने को रोज़ा तोडने वाला बताया गया। और उन चीज़ों के चबाने को भी खाना कहते हैं। फिर कुछ हिस्सा बहरहाल हलक़ के नीचे उतरता है। साथ में उसके आदी लोगों को इसकी ख़ास लज़्ज़त मिलती है। अत: न केवल ये कि उनसे रोज़ा टूट जाएगा, बल्कि अगर उन चीज़ों को जानबूझ कर इस्तेमाल किया गया तो कुफ़्फ़ारा लाज़िम होगा। यही हुक्म में गुल से दांत मांजने का भी होगा, इसलिये कि इसमें भी ख़ास लज़्ज़त मिलती है, और कुछ भाग हलक़ के नीचे उतर जाने का संदेह रहता है।

जहां तक बीड़ी सिगरेट इत्यादि का संबंध है उसमें जानबूझ कर धुंआ अन्दर लिया जाता है और जानबूझ कर धुंआ अन्दर लेने से रोज़ा टूट जाता है, अत: इन सभी चीज़ों से परहेज़ ज़रूरी है।

मंजन और टूथपेस्ट का हुक्म: आंहज़रत स0अ0 ने मिस्वाक की बड़ी ताकीद फ़रमायी है, इस एतबार से फ़ुक़्हा ने रमज़ान में भी मिस्वाक करने की इजाज़त दी है, चाहे मिस्वाक की लकड़ी सूखी हो गीली लेकिन अगर मिस्वाक की तरी या उसकी लकड़ी हलक़ के नीचे उतर जाए तो रोज़ा टूट जाता है लिहाज़ा रोज़े की हालत में मिस्वाक करते हुए इसका ख़्याल रखना चाहिये कि मिस्वाक की तरी या लकड़ी का कोई हिस्सा हलक़ के नीचे न उतरने पाये।

जहां तक मंजन और टूटपेस्थ इत्यादि का संबंध है उनका हुक्म मिस्वाक के हुक्म से अलग है। यद्यपि किसी विशे॥ कारण से अगर उन चीज़ों से दांत मांज ले तो इंशाअल्लाह कराहत नहीं होगी।

उल्टी का हुक्म: उल्टी के बारे में लोगों में आम तौर पर ये ग़लत फ़हमी पायी जाती है कि चाहे जिस प्रकार की भी उल्टी हो रोज़ा टूट जाएगा, हालांकि इसके बारे में कुछ व्याख्या है, हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि आंहज़रत स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया: "जिसको रोज़े की हालत में खुद कै हो जाए उस पर क़ज़ा नहीं है और जो जानबूझ कर उल्टी करे उस पर क़ज़ा लाज़िम है। इस हदीस की बुनियाद पर फ़ुक़्हा ने फ़रमाया कि उल्टी की कई हालतें हो सकती हैं लेकिन रोज़ा केवल दो हालतों से टूटेगा, (1) एक तो ये कि मुंह भर के उल्टी हो जाए और रोज़ा दार उसको निगल जाए। (2) जानबूझ कर मुंह भर उल्टी करे, बाक़ी कोई हालत रोज़ा तोड़ने वाली नहीं है।

आक्सीजन का हुक्म: दमा के मरीज़ को दौरा पड़ने के समय आक्सीजन पहुंचायी जाती है, रोज़े की हालत में इस तहर की आक्सीजन लेने का हुक्म क्या होगा? फ़िक़्ही तथ्यों को सामने रखा जाए तो ख़्याल होता है कि अगर आक्सीजन के साथ कोई दवा न हो तो रोज़ा न टूटना चाहिये क्योंकि ये सांस लेने और सांस के हवा लेना न तो रोज़े को तोड़ने वाला है न ही उस पर खाने पीने का इतलाक होता है। अगर उसके साथ दवा के कण भी हों तो फिर उससे रोज़ा टूट जाएगा।

जहां तक दमा ही के मरीज़ के लिये इन्हेलर के प्रयोग का संबंध है चूंकि उसमें दवा मिली हुई होती है। अत: उससे रोज़ा टूट जाएगा।

इन्जेक्शन और ड्रिप लगवाने का आदेश: जमहूर उलमा की राय यही है कि इन्जेकशन चाहे किसी भी प्रकार का हो उससे रोज़ा नहीं टूटेगा चाहे वो रग में लगाया जाए या गोश्त में। यहीं आदेश ड्रिप लगवाने का भी है, लेकिन बिना किसी कारण के बेहतर यही है कि दिन में न लगवाएं। रात में लगवाएं। आवश्यकता हो तो दिन में भी लगवा सकता है लेकिन केवल इस उद्देश्य से ड्रिप लगवाना कि बदन में ताक़त आ जाए और प्यास में कमी आ जाए मकरूह है।

www.abulhasanalinadwi.org

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ رضي الله عنه की ज़िन्दगी के कुछ नुमाया पहलू

→››› उमर उस्मान नदवी

कुबूल हक़: अल्लाह के रसूल स0अ0 का इरशाद है: "मैंने जिस किसी को भी इस्लाम की तरफ़ बुलाया उसने कुछ न कुछ हिचकिचाहट का इज़हार किया, सिवाए अबूबक्र के जब मैंने इस्लाम की दावत दी तो उन्होने बिना किसी देरी के मेरी बात कुबूल कर ली।"

बुरी चीज़ों से परहेज़: मक्का व मदीना, क्या शहर क्या देहात यहां तक कि हर मुहल्ला हर चौपाल शराब व कबाब और नाच गाने का अड्डा बनी हुई थी। लेकिन उमुलमोमीनीन हज़रत आयशा रज़ि0 फ़रमाती हैं कि: अब्बा जान ने जाहिलियत व इस्लाम दोनों ज़मानों में कभी भी शराब का एक क़तरा ज़बान पर नहीं रखा।

मोहताजों की ख़बर लेना : हज़रत उमर रज़ि0 एक बूढ़ी औरत की ख़िदमत करने के लिये जाया करते थे, जब उससे उसकी ज़रूरते पूछते तो वो औरत हज़रत उमर रज़ि0 से कहती कि आप के पहले एक शख़्स आया था जो सारे काम करके चला गया, उस पर हज़रत उमर को हैरत होती, इसी तरह कई दिन गुज़र गये, एक दिन हज़रत उमर सुबह जल्दी तशरीफ़ ले आये और दरवाज़े पर आकर खड़े होकर उस शख़्स के निकलने का इन्तिज़ार करने लगे, इतने में देखा कि एक शख़्स बुढ़िया के पास से तेज़ी से निकल कर अपने रास्ते चल दिया, हज़रत उमर रज़ि0 भी उसके पीछे हो लिये, उस शख़्स ने जैसे अपने चेहरे से पर्दा हटाया तो क्या देखते हैं कि वो अबूबक्र रज़ि0 हैं, उन्हें देखकर हज़रत उमर रज़ि0 एकदम से बोल पड़े कि मैं जानता था कि मुझसे पहले आप के सिवा कोई आ ही नहीं सकता था।

हिम्मत व हौसला: अल्लाह के रसूल स0अ0 की वफ़ात हो चुकी है, हज़रत उसामा रज़ि0 के नेतृत्व में शाम लश्कर भेजने की तैयारी है, बड़े बड़े सहाबा कि मौजूदगी में हज़रत उसामा रज़ि0 के नेतृत्व पर बेइतमिनानी ज़ाहिर की जाने लगी, और अमीर के पद से हटाए जाने के लिये कारण तलाश किये जाने लगे, कुछ लोग हज़रत अबूबक्र रज़ि0 की ख़िदमत में आये और कहा कि मौजूदा हालात मुसलमानों के लिये बहुत कठिन और ख़तरनाक हैं। इस मौक़े पर लश्कर शाम भेजकर मुसलमानों को मुन्तशिर करना ठीक नहीं, लेकिन चूंकि अल्लाह के रसूल स0अ0 अपनी ज़िन्दगी में ही हज़रत उसामा को अमीर बनाकर लश्कर भेजने की तैयारी कर चुके थे इसलिये हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 ने बड़ी ही साबित क़दमी से जवाब दिया: "उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है अगर मुझे यक़ीन हो कि जंगल के दरिन्दे मुझे उठाकर ले जांए तो भी मैं हज़रत उसामा रज़ि0 के इस लश्कर को रवाना करने से नहीं रोक सकता जिसे रसूलल्लाह स0अ0 ने जाने का हुक्म फ़रमाया था, अगर मदीना में मेरे सिवा कोई बाक़ी न रहे तब भी मैं इस लश्कर को ज़रूर रवाना करूंगा।"

ईमानी जुर्रत: अभी ख़िलाफ़त मिली ही थी कि कुछ लोगों के बारे में मालूम हुआ कि वो बैतुलमाल में ज़कात जमा करने से इनकार कर रहे हैं। हज़रत अबूबक्र की ईमानी ग़ैरत जोश में आ जाती है और ज़कात से इनकार का ऐलान करने वालों के ख़िलाफ़ जंग का ऐलान कर दिया जाता है। लोग जंग न करने की राय देते हैं, लेकिन हज़रत अबूबक्र रज़ि0 खड़े हो जाते हैं और कहते हैं कि मैं उन सब लोगों से उस समय तक जंग करता रहूंगा जब तक वो रस्सी भी वसूल न कर लूं जो अल्लाह के रसूल के ज़माने में दी जाती थी।

सब्र: अल्लाह के रसूल स0अ0 की वफ़ात का वाक़्या पेश आ चुका था, लोगों पर सक्ता तारी था, मारे ग़म के दीवानों की सी हालत होती जा रही थी कि उनका महबूब उनसे जुदा हो गया, हज़रत उमर तलवार लेकर मेम्बर पर खड़े होकर कह रहे थे "जो भी ये कहेगा कि अल्लाह के रसूल वफ़ात पा चुके हैं इस तलवार से उसकी गरदन काट डालूंगा।" हज़रत अबूबक्र आते हैं और हज़रत आयशा रज़ि0 के हुज्रे में तशरीफ़ ले जाते हैं, रूख़ मुबारक से कपड़ा हटाकर बोसा देते हैं और फ़रमाते हैं: "क्या ही बाबरकत आपकी ज़िन्दगी और क्या ही पाकीज़ा आप की मौत" इसके बाद हुजरे से बाहर आ जाते हैं और मेम्बर पर चढ़कर इरशाद फ़रमाते हैं: ऐ लोगों! जो मुहम्मद की इबादत करता था उसे मालूम होना चाहिये कि मुहम्मद तो इन्तिक़ाल कर गये, लेकिन जो सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करता था तो वो ज़िन्दा है और उसे कभी मौत नहीं आयेगी" इसके बाद क़ुरआन करीम की आयत (अनुवाद: मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं) तिलावत फ़रमायी, और मेम्बर से नीचे तशरीफ़ ले आये।

ख़ुदा की राह में ख़र्च करने का जज़्बा: हज़रत उमर रज़ि0 कहते हैं कि एक बार अल्लाह के रसूल स0अ0 ने हमें सदक़ा करने का हुक्म फ़रमाया, ये वो वक़्त था कि जब मेरे पास बहुत सा माल मौजूद था, ये सोच कर कि अगर मैं किसी दिन अबूबक्र से भलाई में बाज़ी ले जा सकता हूं तो वो दिन आज का दिन है, और अपना आधा माल लेकर हुज़ूर स0अ0 की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप स0अ0 ने मुझसे पूछा कि घर में क्या छोड़ कर आये हो?मैने जवाब दिया कि आधा माल छोड़ कर आया हूं। थोड़ी ही देर में हज़रत अबूबक्र तशरीफ़ ले आये और अपना सब कुछ लाकर हुज़ूर स0अ0 की ख़िदमत में पेश कर दिया। आप स0अ0 ने उनसे पूछा कि अपने घर वालों के लिये क्या छोड़ कर आये हो?हज़रत अबूबक्र ने जवाब दिया कि अल्लाह और उसका रसूल! ये जवाब सुनकर हज़रत उमर कहते हैं कि मैंने हज़रत अबूबक्र रज़ि0 से कहा: मैं कभी भी आपसे किसी काम में आगे नहीं बढ़ सकता।

www.abulhasanalinadwi.org

शब–ए–क़दर

हज़ार रातों से बेहतर एक रात

→››› अहसन अब्दुल हक़ नदवी

शब–ए–क़दर की अज़मत और अहमियत का ज़िक्र कुरआन मजीद में बल्कि उसकी एक पूरी सूरह में भी किया गया है। कुरआन मजीद को हमने शब–ए–क़दर में नाज़िल कियाः "तुम्हे क्या पता कि लैलतुल क़द्र क्या है" फिर फ़रमाया गया "शब–ए–क़दर हज़ार महीनों से बेहतर है" फिर उसकी बरकत और रूहानी रौनक़ों का ज़िक्र इस तरह फ़रमाया गया है, फ़रिश्ते और रूहुल कुद्स (हज़रत जिब्राईल अलै0) इस रात को अपने मालिक के हुक्म से तमाम फ़ैसले लेकर उतरते हैं, सरासर सलामती की रात है सुबह सूरज निकलने से पहले तक (बरकतों और रूहानी रौनकों का ये सिलसिला क़ायम रहता है)

शब–ए–क़दर में कुरआन नाज़िल फ़रमाया गया, और फिर आसमान अव्वल से इस्लाम के पैग़मबर मुहम्मद स0अ0 पर धीरे धीरे तेईस सालों में इसका नुजूल पूरा हुआ।

कुरआन मजीद की इस सूरह से चार बाते स्प ष्ट मालूम हुईं, 1. कुरआन इसी रात में नाज़िल हुआ 2. ये रात हज़ार महीनों से बेहतर है यानि इसकी इबादतों का अज्र व सवाब हज़ार महीने की इबादत के अज्र व सवाब से भी ज़्यादा है 3. इसमें फ़रिश्तों का कसरत से नुजूल होता है 4. ये रात सलामती की है और इस रात में सारी बरकतें और रहमतें सुबह सूरज निकलने तक रहती हैं।

बड़ा बदनसीब है वो व्यक्ति जिसको ख़ैर व बरकत की ये रात मिले और वो इससे फ़ाएदा न उठाए, हज़रत अनस रज़ि0 ने फ़रमायाः कि एक बार रमज़ानुल मुबारक का महीना आया तो आप स0अ0 ने फ़रमायाः कि एक रात है जो हज़ार महीनों से बेहतर है जो शख्स इस रात से महरूम रह गया तो गोया सारी ही ख़ैर से महरूम रह गया, और इसकी भलाई से महरूम नहीं रहता मगर जो व्यक्ति महरूम ही है।

शब–ए–क़दर रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अशरे (दस दिनों) की ताक़ रातों में होती है और बदलती भी रहती है। हज़रत उबादा बिन सामित रजि0 ने शब–ए–क़दर के बारे में आप स0अ0 से पूछा तो आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमाया कि रमज़ान के आख़िरी अश्रे की ताक़ रातों में यानि इक्कीस, तेईस, पच्चीस, सत्ताइस, उन्तीसवीं रात में या रमज़ान की आख़िरी रात में भी हो सकती है। साल में एक ही शब में और एक ही तारीख़ में शब–ए–क़दर का होना ज़रूरी नही है। अक्सर लोगों का रूझान रमज़ानुल मुबारक की सत्ताइसवीं शब की तरफ़ है, ख़ुद आप स0अ0 ने सत्ताइसवीं शब में शब–ए–क़दर को तलाश करने का हुक्म फ़रमाया।

शब–ए–क़दर में आप स0अ0 का तरीक़ा इबादतों से अधिक एहतमाम का था, आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः "जिसने शब–ए–क़दर में ईमान व इख़लास के साथ नमाज़ पढ़ी उसके पिछले सभी गुनाह माफ़ हो जांएगें।"

इस रात मे दुआ भी क़ुबूल की जाती है, हज़रत आयशा रज़ि0 ने आप स0अ0 से पूछा कि अगर मैं शब–ए–क़दर को पहचान लूं तो क्या दुआ करूं?आप स0अ0 ने एक छोटी और जामए दुआ सिखाई।

"اَللّٰھُمَّ اِنَّکَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّیْ"

आप स0अ0 ने फ़रमायाः कि जब शब–ए–क़दर होती है तो हज़रत जिब्राईल अलै0 फ़रिश्तों की एक जमाअत के साथ दुनिया में उतरते हैं और वो इस शख़्स के लिये जो खड़े या बैठे अल्लाह का ज़िक्र कर रहा हो रहमत की दुआ करते हैं।

इस मुबारक रात बार बार ये ख़ुदाई ऐलान होता रहता है कि है कोई माफ़ी चाहने वाला कि मैं उसे माफ़ कर दूं, है कोई आफ़ियत मांगने वाला कि मैं उसे आफ़ियत अता कर दूं, है कोई रोज़ी मांगने वाला कि मैं उसे रोज़ी इनायत करूं, है कोई सवाल करने वाला कि मैं उसके सवाल को पूरा करूं।

अल्लाह तआला का ये करम आम दिनों में होता है तो जो व्यक्ति शब–ए–क़दर में ख़ुदा की याद व इबादत में लगा हुआ हो उसके साथ अल्लाह की रहमत का क्या मामला होगा।

जिन रातों में जगने का हुक्म दिया गया है उनमें नमाज़ों का एहतमाम तो करना ही चाहिये, कुरआन मजीद की तिलावत, कुरआन का सुनना, हदीस का पढ़ना और सुनना, तस्बीहात, दरूद शरीफ़ वग़ैरह का पढ़ना ये सभी काम सवाब वाले हैं, कोशिश करनी चाहिये कि रात का बड़ा हिस्सा इन कामों में गुज़र जाए।

रमज़ानुल मुबारक और शब–ए–क़दर की अज़मत का तो ये आलम है कि जब ईद का दिन होता है तो अल्लाह तआला फ़रिश्तों से पूछता है कि क्या बदला है उस मज़दूर का जो अपना काम पूरा कर चुका हो वो कहते हैं कि ऐ हमारे मअबूद, हमारे आक़ा इसका बदला यही है कि उस मज़दूर की पूरी पूरी मज़दूरी दे दी जाए, अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है कि ऐ फ़रिश्तों मैंनें तुम्हें गवाह बनाता हूं, मैंने उनको रमज़ान के रोज़ों और तरावीह के बदले में अपनी रज़ा और मग़फ़िरत अदा कर दी। और बन्दों से इरशाद होता है कि मेरे बन्दे मुझसे मांगों, मेरी इज्ज़त की क़सम आज के दिन इस इज्तमा में अपनी आख़िरत के बारे में मुझसे जो सवाल करोगे अता करूंगा। और दुनिया के बारे में जो सवाल करोगे उसमें तुम्हारी मसलेहत पर नज़र करूंगा, अब बख़्शे बख़्शाए अपने घर को लौट जाओ तुमने मुझे राज़ी कर दिया और मैं तुमसे राज़ी हो गया।

लिहाज़ा हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वो इस मुबारक रात में ख़ुदा की रहमतों का तालिब हो, और उस रहमान और रहीम के आगे अपने सर को झुकाए और गुनाहों से भरे हुए अपने माथे को आजिज़ी व इन्कसारी के साथ ज़मीन पर रख कर अल्लाह से तौबा व इस्तिग़फ़ार करे।

www.abulhasanalinadwi.org

प्रश्न – उत्तर

→››› अबरार हसन अय्यूबी नदवी

सजदः–ए–शुक्र

य्श्रृ॰: क्या सजदा–ए–शुक्र के लिये क़िब्ला की तरफ़ रुख़ करना ज़रूरी है और क्या वजू शर्त है?

(मुहम्मद सुफ़ियान, हैदराबाद)

?य्य्ऋ॰: सजदा–ए–शुक्र के लिये पाकी ज़रूरी है यानि गुस्ल किये हुए हो और बावजू हो इसी तरह क़िब्ला की तरफ़ रुख़ होना भी ज़रूरी है।

पेमेन्ट सीट

य्श्रृ॰: आज कल बड़े बड़े कालिजों में और यूनिवर्सिटियों में प्रवेश के लिये सीट नहीं मिलती, बाद में पेमेन्ट सीट लेते हैं, इस सीट के लिये जो रक़म उनको दी जाती है क्या ये भी किसी प्रकार की रिश्वत होती है?(जाफ़र हुसैन ख़ान्जी, डोडा कश्मीर)

?य्ऋ॰: स्कूल और कालिज का प्रशासन जो रक़म लेते हैं वो रिश्वत ही का एक प्रकार है, अगर कोई इस सीट का योग्य है उसके बावजूद उसको इस सीट से वंचित किया जा रहा है तो मजबूरी में रक़म देकर अपना हक़ वसूल कर लेना जाएज़ होगा, और अगर योग्य नहीं था, केवल रक़म देकर सीट ली जा रही तो लेने वाला भी गुनहगार होगा और देने वाला भी गुनहगार होगा।

जुमा की दूसरी अज़ान का जवाब

य्श्रृ॰: मैने बहुत सारे दोस्तों से और दूसरे लोगों से भी सुना है कि जुमा के दिन दूसरी अज़ान का जवाब देना मकरूह है, मगर बहुत से लोग कहते हैं कि मकरूह नहीं है?अब आप ही बताएं कि जवाब दे सकते हैं कि नही?(जाफ़र हुसैन खान्जी, डोडा कश्मीर)

?य्य्ऋ॰: जुमा के दिन दूसरी अज़ान का ज़बान से जवाब देना मकरूह है, दिल से जवाब दिया जा सकता है, ये हनफ़ियों का मसलक है, कई दूसरे इमामों के यहां ज़बान से भी जवाब दिया जा सकता है, मसला भिन्नता का है, हनफ़ियों की दलील बुख़ारी की ये हदीस है (फिर जब इमाम खुत्बे के लिये निकले तो ख़ामोशी अख़्तियार कीजिए)

चालिसवां या बरसी का हुक्म

य्श्रृ॰: मरहूमों के लिये चालिसवां, तीजा, बरसी का शरीअत में क्या हुक्म है?(अज़रा मन्सूर रायबरेली)

?य्ऋ॰: मरुहूमों के लिये मग़फ़िरत की दुआ करना ईसाल सवाब करना अज्र व सवाब का काम है, लेकिन इसके लिये कोई ख़ास दिन या मौक़ा जैसे चालिसवां, तीजा, बर्सी इत्यादि शरीअत से साबित नहीं है। इसलिये ये दीन में अपनी तरफ़ से नई बात पैदा करना है जो कि बिदअत है।

सलातुत तस्बीह

य्श्रृ॰: सलातुत तस्बीह पढ़ने का सही तरीक़ा जानना चाहती हूं। (अज़रा मन्सूर रायबरेली)

?य्य्ऋ॰: सबसे पहले इस तरह नियत की जाए: नियत करती हूं मैं चार रकअत नमाज़ "सलातुत तस्बीह" की, वास्ते अल्लाह तआला के, रुख़ मेरा क़िब्ला की तरफ़, अल्लाहु अकबर!

अब इस नमाज़ के दो तरीक़े हैं: पहला ये कि चार रकअत नफ़िल की नियत बांधे और "सुब्हानकल्लाहुम्मा" और "अल्हम्द और सूरह" पढ़कर पन्द्रह बार "सुब्हान अल्लाहि वल्हमदु लिल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु अल्लाहु अबकर" पढ़े, फिर रुकू में "सुब्हाना रब्बियल अज़ीम" के बाद दस बार ये कलमा पढ़े, फिर रुकू से खड़े होकर "समि अल्लाहु लिमन हमिदा" के बाद दस बार पढ़े, फिर दोनों सजदों में "सुब्हाना रब्बियल आला" के बाद दस दस बार पढ़े, फिर दोनों सजदों के बीच बैठ कर दस बार पढ़े और दूसरे सजदे में अल्लाहु अकबर कह कर उठे और बैठ जाए और दस बार ये कलमा पढ़कर अल्लाहु अकबर कह कर खड़ा हो जाए, इसी तरह दूसरी रकअत पढ़े, और जब दूसरी रकअत में अत्तिहयात के लिये बैठे तो पहले दस बार ये कलमा पढ़े फिर अत्तिहयात पढ़े, इसी तरह चार रकअतें पढ़े।

दूसरा तरीक़ा ये है कि "सुब्हानकल्लाहुम्मा" के बाद "अल्हम्दु शरीफ़" से पहले पन्द्रह बार ये कलमे पढ़े और फिर "अल्हम्दु शरीफ़" और "सूरह" के बाद दस बार पढ़े और बाक़ी सब जगह पहले तरीक़े के अनुसार पढ़े यद्यपि इस सूरह में दूसरे सजदे के बाद बैठ कर न पढ़े और न अत्तिहयात के साथ पढ़े। दोनों तरीक़े हदीस में आये हैं कभी पहले तरीक़े से पढ़ ली जाए कभी दूसरे तरीक़े से पढ़ ली जाए।

रमज़ानुल मुबारक में वित्र की नमाज़

य्श्रृ॰: लोगों में मशहूर है कि रमज़ानुल मुबारक में जो व्यक्ति इशा की नमाज़ जमाअत के साथ अदा न करे उसके लिये वित्र का इमाम के साथ पढ़ना सही नहीं। क्या ये सही है?(मुहम्मद अब्दुल्लाह खण्ड पिपड़ा, फ़ैज़ाबाद)

?य्ऋ॰: लोगों का ये ख़्याल सही नहीं है। अगर इशा की फ़र्ज़ नमाज़ इमाम के साथ नहीं पढ़ी तब भी वित्र इमाम के साथ पढ़ सकते हैं यद्यपि ये ज़रूरी है कि तरावीह और वित्र से पहले इशा की नमाज़ पढ़ ली जाए।

आप आपने दीनी प्रश्न हमारी वेब साइट पर भी पूछ सकते हैं:
Log on:www.abulhasanalinadwi.org

www.abulhasanalinadwi.org

तुर्की

एक नये युग का आरम्भ

—››› मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

तुर्की में 12 जून को होने वाले संसदीय चुनाव में इस्लाम पसन्द शासकों की जमाअत जस्टिस एंड डेवलपमेंट पार्टी (AKP) ने लगातार तीसरी बार कामयाबी हासिल की। इस कामयाबी से दुनिया भर के इस्लाम पसन्द संगठनों और जमाअतों मे ख़ुशी की लहर दौड़ गयी, और मुबारक बाद का सिलसिला शुरू हो गया। चुनाव में शानदार जीत के बाद प्रधानमंत्री तैय्यब अर्दगान ने हज़ारों लोगों की भीड़ को सम्बोधित करते हुए कहा कि ये कामयाबी इस बात की दलील है कि जनता ने नये नागरिक कानूनो को लागू करने का संदेश दे दिया है। अब हम नये क़ानून की तैयारी और उसको लागू करने के लिये सभी जमाअतों को लेकर चलेंगे और सभी निर्णय आपसी सहमति से और जनता के हित को सामने रखकर किये जांएगे।

जस्टिस पार्टी की ज़बरदस्त कामयाबी के कारणों के विभिन्न पहलुओं का निरीक्षण किया जा रहा है। जिनमें सबसे ऊपर पार्टी की समाजी व आर्थिक पालिसियां और जनता की सहूलतें हैं। इसमें कोई शक नहीं कि इस पार्टी के शासन में आने के बाद मुद्रा स्फ़ीति की दर 30 प्रतिशत से कम होकर 7 प्रतिशत हो गयी है और बेरोज़गारी की दर कम होते हुए केवल दस प्रतिशत बची है। 2007 ई0 से 2011 ई0 तक देश की पैदावार में 9 प्रतिशत तक की बढ़ोत्तरी हुई है। ये दर चीन के बाद दुनिया के दूसरे 20 देशों में दूसरे नम्बर पर थी। तथ्यों से हट कर इस समय तुर्की और तुर्क जनता मज़बूती, उन्नति और ख़ुशहाली के ऐसे मार्ग पर अग्रसर है जिस पर वो गर्व कर सकते हैं।

मुस्तफ़ा कमाल पाशा ने तुर्की को इस्लामी विरासत से काटकर एक धर्म निरपेक्ष सेक्यूलर देश के रूप में पेश किया था। 1938 ई0 में जबकि मुस्तफ़ा कमाल पाशा का इन्तिक़ाल हो गया, मगर उसके जानशीनों ने हमेशा तुर्की को एक धर्मनिरपेक्ष देश की हैसियत से परिचित कराया है। इसके बावजूद सन् 1960ई0 से सन् 1980ई0 के बीच तुर्की की चार फौजी बग़ावतें हुईं जिनके परिणाम में जनता के चुने हुए शासन को एक तरफ़ कर दिया गया। इसी तरह सन् 1980ई0 से तुर्की गणतन्त्र के नाम पर फ़ौजी तानाशाही के साये में था, 2002ई0 में तुर्की ने एक इन्क़लाबी करवट ली, जब तैय्यब अर्दगान की इस्लाम पसन्द पार्टी को शासन प्राप्त हुआ। और धीरे धीरे स्थिति में बदलाव आना शुरू हुआ। इस महत्वपूर्ण बदलाव का ही नतीजा है कि तुर्क जनता ने जस्टिस पार्टी को धर्मनिरपेक्षता के मुक़ाबले इस्लामी कानूनो की तरफ़दारी पर वोट दिया। उन्होने सेक्यूलरिज़्म या कमालिज़्म और फ़ौजी शासन से निजात के लिये इस्लाम और इस्लाम पसन्दों को चुना। इसलिये ये कहना बेजा न होगा कि बीते दस बरसों में तुर्की में इस्लामी क़ानून व शासन और इस्लामी रिवायतों में बढ़ौत्तरी हुई है। ये एक क़ौमी तब्दीली की ओर अच्छा क़दम है।

जस्टिस पार्टी की कामयाबी का एक महत्वपूर्ण कारण "साफ़ सुथरा शासन" भी है। इस पार्टी ने दुनिया के सामने ये नमूना भी पेश किया कि इस्लाम पसन्द शासन दस साल अधिपत्य मे रहते हुए भी हर प्रकार की बदउन्वानी से पाक है। दूसरी मुस्लिम हुकूमत हों या पश्चिमी शासन, आज वो जिस तरह आर्थिक व सेक्स स्केन्डलस में लिप्त हैं उनके लिये तुर्की का ये साफ़ सुथरा शासन न केवल एक चैलेन्ज है बल्कि वहां की जनता के लिये एक पैग़ाम भी है।

तुर्की में इस्लाम पसन्द पार्टी की कामयाबी में जहां आन्तरिक कारण कार्यरत हैं वहीं बाहरी और अन्तर्राष्ट्रीय कारणों को भी नज़रअन्दाज़ नहीं किया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तुर्की की हुकूमत ने एक बावक़ार और मज़बूत इस्लाम पसन्द शासन की मिसाल पेश की है जिसके गहरे प्रभाव को पश्चिमी देशों ने बड़ी सन्जीदगी से महसूस किया। इसमें सबसे महत्वपूर्ण ससंद का वो निर्णय है जिसमें उसने अमरीका को ईराक़ के ख़िलाफ़ फ़ौजी कार्यवाही करने के लिये किसी भी क़ीमत पर अपनी ज़मीन देने से इनकार कर दिया।

जनवरी 2009 ई0 में जब ग़ज़्ज़ा पर इस्राईल के वहशियाना और ज़ालिमाना हमले जारी थे और मुस्लिम शासक बयानबाज़ियों में व्यस्त थे। उस समय डेविस में "वर्ल्ड इकोनामिक फ़ोरम" का आयोजन हुआ जहां तुर्की के प्रधानमंत्री तैय्यब अर्दगान ने इस्राईली नुमाइन्दे शमऊन पीरेज़ की कड़ी आलोचना करते हुए फ़ोरम का बायकाट किया। जिससे एक हौसला देने वाला संदेश मुस्लिम उम्मत के सामने आया।

जुलाई 2009ई0 में अवीग़वी मुस्लिम शासन के ख़िलाफ़ चीन की कार्यवाही की खुल कर निंदा की और "मुस्लिम नस्ल कुशी" से तअबीर किया।

13 मई 2010ई0 में "फ्रीडम फ्लोटेला" का वाक़्या पेश आया, इस जहाज़ी इमदादी काफ़िला में तुर्की का एक जहाज़ भी शामिल था जो मज़्लूम फ़िलिस्तीनियों के लिये दवा, कपड़े और दूसरी ज़रूरी चीज़ें लेकर जा रहा था। इस्राइल कमान्डर ने उस काफ़िले को निशाना बनाया जिसमें तुर्की के भी बहुत से लोग मारे गये थे। और जब तैय्यब अर्दगान ने वाक़्ये की कड़ी निन्दा की और फ़ौरन तुर्की से अपने राजनीतिक संबंध समाप्त करने की घोषणा की और उस वाक़्ये की मिसाल तुर्की ने नाइन इलेवेन से दी। ध्यान रहे कि तुर्की और इस्राईल के बीच बेहतरीन व्यापारिक, राजनीतिक और फ़ौजी संबंध स्थापित थे।

ये वो आन्तरिक व बाहरी कारण हैं जिनके परिणाम में अर्दगान की पार्टी दस साल से शासन में है, और अब इसकी वर्तमान की सफलता के बाद सियासी पन्डित इस बात अन्दाज़ा लगा रहे हैं कि तुर्की में बढ़ते इस्लामी ग़लबे के परिणाम में सेक्यूलर दृष्टिकोण व विचार धुंधले पड़ते जा रहे हैं और तुर्की आने वाले कुछ समय में क्रान्तिकारी देश के रूप में उभर कर सामने आयेगा, और दुनिया के नक़्शे को ही बदल देगा।

www.abulhasanalinadwi.org

दीन का वास्तविक स्तर व पैमाना
सहाबा किराम रज़ि० की जिन्दगी

सहाबा किराम रज़ि० केवल अक़ीदे व इबादत मे मुसलमान नहीं थे, मामलात और अख़्लाक़ में भी मुसलमान थे। जिन्दगी की रस्मों के जो फ़ितरी तक़ाज़े और आवश्यकताए हैं, उनमें भी थीं। हम मुसलमानों का हाल क्या है, कुछ लोग तो ऐसे हैं जो अक़ीदों में दीन के पाबन्द हैं, अलहम्दुलिल्लाह तौहीद के बारे में उनका ज़ेहन साफ़ है रिसालत के बारे में, मआद के बारे में और जो बुनियादी अक़ीदे हैं लेकिन इबादत में कच्चे हैं। और बहुत से वो हैं जो अक़ीदे और इबादत में तो पुख़्ता हैं, अक़ीदे भी सही हैं, इबादत के भी पाबन्द हैं, लेकिन मामलात और अख़्लाक़ को न पूछिये। मामलात और अख्लाक में बहुत अविश्वास्नीय। किसी से मामला पड़ैगा तो ख़यानत से न चूकेंगे। मामला पड़ेगा तो तख़फ़ीफ़ से काम लेंगे, नाप तौल में कमी करेंगे और उसमें शिरकत होगी तो इसमें नाइन्साफ़ी और ख़यानत के करने वाले होंगे, किसी का पड़ोस होगा, उनसे कष्ट पहुंचेगा, हदीस में आता है: (मुसलमान वो है जिसकी ज़बान और हाथ से मुसलमान सुरक्षित व सन्तुष्ट रहे) (तुममे से कोई मोमिन नहीं हो सकता जब तक उसका पड़ोसी उसके कष्ट से सुरक्षित न हो जाए।)

तो एक वर्ग ऐसा है कि न पूछिये, इसने मामलो व अख़्लाक़ को बिल्कुल दीन से बाहर करके रख दिया है। ये समझ रखा है कि बस अक़ीदे व इबादात ही ज़रूरी हैं, बाक़ी अख़्लाक़ व मामलों में ग़ैर मुस्लिमों से भी नीचे का स्तर होता है। न मामले की सफाई, न वादे की पाबन्दी, न अमानत का ख़्याल, न इन्साफ़ के साथ बंटवारा, कोई चीज़ नहीं, बन्दों का हक़ नहीं, अहले क़राबत अहले हुकूक़ के बारे में बिल्कुल आज़ाद, जिन लोगों के साथ उनका मामला पड़ता है आजाद, व्यापार में भी जीवन के दूसरे भाग में भी मनमानी कार्यवाही करते हैं। सहाबा किराम रज़ि० का हाल ऐसा नहीं था सहाबा किराम रज़ि० अक़ीदे से लेकर अख़्लाक़ व मामलात तक बिल्कुल तराज़ू की तरह थे जो किसी की रिआयत नहीं करती, किसी को तरजीह नहीं देती, वो सब इन्साफ़ के तराज़ू थे, वो सब हक़ का मेयार थे। उनकी कोई चीज़ शरीअत के रास्ते से हटी हुई नहीं थी उनका कोई अमल शरीअत के रास्ते से हटा हुआ नहीं था।

www.abulhasanalinadwi.org

रमज़ान

मौसम बहार का ज़माना!

ये बहार भरा मौसम जब किसी के शौक़ व अरमान में गुज़रेगा, ये मुबारक घड़ियां जब किसी की याद में बीतेंगी, ये मुबारक दिन जब किसी की इबादत में बग़ैर भूक प्साय के गुज़रेगें, ये बरकत वाली रातें जब किसी के इन्तिज़ार में आंखों ही में कटेंगी, तो नामुमकिन है कि रूह में लताफ़त, दिल में सफ़ाई, और नफ़स में पाकीज़गी पैदा न हो जाए। हैवानियत दूर होगी। मलकूतियत नज़दीक आयेगी, और इन्सान खुद अपनी एक नयी ज़िन्दकी महसूस करेगा, ऐसी हालत में बिल्कुल कुदरती है, कि सोज़े दिल और तेज़ हो जाए। कुब्र व वस्ल की तड़प और बढ़ जाए, तज़किया व मुजाहिदा के असर से ज़ंग दूर होकर किसी का अक्स कुबूल करने के लिये दिल का आइना बेक़रार होने लगे, ठीक यही घड़ी, चाह का शौक़, और ज़ौक अता, सवाल और इजाबत, दुआ और मक़बूलियत, हाजतमन्दी और करीमी, गदाई और शाही, बन्दगी बन्दापरवरी के बीच नाज़ व नियाज़ की होती है। इसलिये प्राकृतिक तौर पर इस मन्ज़िल पर पहुंचते ही ग़ैब से ये आवाज़ कानों को सुनाई देने लगती हैं कि ऐ हमारे पयाम पहुंचाने वाले, हमारे शैदाई, हमारे परसतार, हमारे बन्दे, अगर तुमसे हमारा पता पूंछे तो उनको बता दो कि हम उनसे कुछ दूर नही हम तो उनके बहुत ही क़रीब हैं हमें दिल की तड़प के साथ पुकारें तो सही, हम फ़ौरन उनकी पुकार सुनेंगे वो केवल हमसे अपनी लौ लगाए रहें, और हम पर भरोसा रखें, इससे वो सीधी राह पाकर और मन्ज़िल तक पहुंच कर रहेंगे।

अब्दुल माजिद दरियाबादी रह०

तफ़सीर माजिदी

www.abulhasanalinadwi.org